छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास : बैसाख-ज्येष्ठ, संवत् 2074
मई 2017

ओ३म्

अंक 140, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

सच्चे देश भक्तों के आदर्श
वीर विनायक दामोदर सावरकर

जमा है अहबाब और सबको कफन की फिक्र है।
मरने वाले को मगर अब भी वतन की फिक्र है।।

राजपूताने का शेर—महाराणा प्रताप

दिनांक 4 अप्रैल से 10 अप्रैल 2017 तक ग्राम कण्ठीपाली (रायगढ़) में सम्पन्न चरित्र निर्माण एवं आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर की चित्रमय झलकियाँ

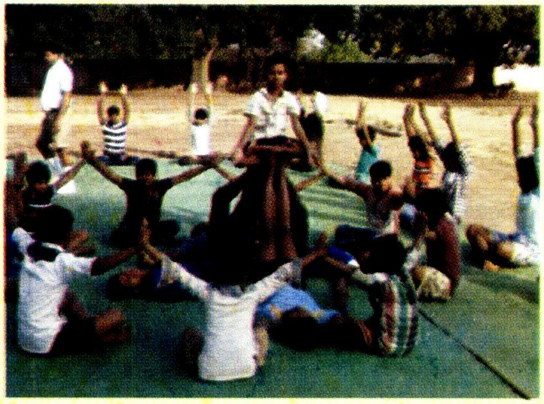

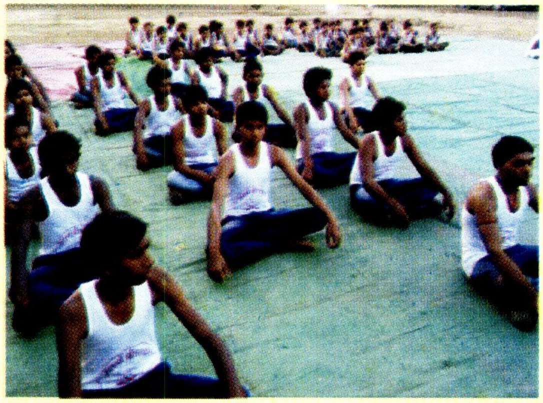

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७४
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११९
दयानन्दाब्द - १९४

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - १२, अंक ११ | ओ३म् | मास/सन् -मई २०१७

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	इन्द्र-वरुण का प्रभाव	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	राष्ट्रोत्थान में शिक्षा तंत्र की भूमिका	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	संकल्पशक्ति	आनन्द प्रकाश गुप्त	०८
४.	आर्यसमाज- पारस या सोना या ...	स्व. डॉ. पुष्पावती	११
५.	पुरोहित और उसके दायित्व	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	१३
६.	यज्ञीय बन प्राणायाम पूर्वक प्रभु अर्चन करें	डॉ. अशोक आर्य	१५
७.	स्वामी दयानन्द का यज्ञ विषयक दृष्टिकोण	डॉ. उदयन आर्य	१७
८.	सच्चे देशभक्तों के आदर्श जीवित शहीद वीर विनायक दामोदर सावरकर	मनमोहन कुमार आर्य	१९
९.	खरा धन	आचार्य कर्मवीर शास्त्री	२३
१०.	शिक्षा के साथ शिष्टाचार अनिवार्य	अंजलि आर्या	२६
११.	जिस घर में बेटी नहीं, वह घर रेगिस्तान	मुनेश त्यागी	२७
१२.	मरने वाले को मगर अब भी वतन की फिक्र है	ऋषि कुमार आर्य	२९
१३.	होमियोपैथी से पथरी का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१४.	समाचार दर्पण		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

इन्द्र-वरुण का प्रभाव

वेद
वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

न तमंहो न दुरितानि मर्त्यम्, इन्द्रावरुणा न तपः कुतश्चन्।
यस्य देवा गच्छथो वीथो अध्वरं, न तं मर्तस्य नशते परिह्वृतिः॥ ऋग्. ७.८२.७

ऋषिः **मैत्रावरुणिः वसिष्ठः**। देवता **इन्द्रावरुणौ**। छन्दः **जगती**।

● **(देवा)** हे दानादिगुणयुक्त **(इन्द्रावरुणा)** इन्द्र और वरुण जीवात्मन् और परमात्मन्! (तुम) **(यस्य)** जिसके **(गच्छथः)** व्यापते हो (और जिससे) **(वीथः)** प्रीति करते हो **(तं मर्त्यं)** उस मर्त्य को **(कुतः चन)** कहीं से भी **(न अंहः)** न पाप (प्राप्त होती है), **(न दुरितानि)** न दुर्गतियाँ (प्राप्त होती है) **(न तपः)** न सन्ताप (प्राप्त होता है) **(न)** न **(तं)** उसे **(मर्तस्य)** मनुष्य की **(परिह्वृतिः)** कुटिलता **(नशते)** प्राप्त होती है।

इन्द्र और वरुण देवों का प्रताप देखो। इन्द्र कर्मशील जीवात्मा है और वरुण भक्त-जनों को वरने वाला पाप-निवारक परमात्मा है। ये दोनों दानादि गुणयुक्त होने से देव कहते हैं। जो मानव अपनी परमात्मा की आवाज को दबा देता है और परमात्मा से मिलने वाला सन्देश को भी अनसुना कर देता है, वह एक महान् लाभ से वंचित रह जाता है। इसके विपरीत जिसके जीवन-यज्ञ को ये दोनों देव व्याप लेते हैं और जिसे अपने प्रेमपाश में बांध लेते हैं, उसे अनेकानेक वरदान स्वतः प्राप्त होते चलते हैं। मनुष्य मर्त्य है, मरणधर्मा है, पर ये दोनों देव अजर-अमर है। सामान्यतः मनुष्य मर्त्य एवं अल्पशक्ति होने के कारण पापों को करता है, और उनके फल के रुप में दुर्गतियों को भी प्राप्त करता है, क्योंकि किये हुए पापों का फल ईश्वरीय विधान के अनुसार उसे अनिवार्य रुप में भोगना पड़ता है। परन्तु जिस मनुष्य पर आत्मा-परमात्मा-रुप-इन्द्र-वरुण की कृपा हो जाती है, उसे पाप और दुर्गति प्राप्त नहीं होते। उनकी अपनी अन्तरात्मा उसे सदा पाप करने से रोकती रहती है और परमात्मा के गुणों का चिन्तन भी उसे पाप-कर्मों से बचाता है। उसे संताप भी विह्वल नहीं करता। अपने आत्मा की सहन-शक्ति और अशरण-शरण प्रभु का नाम-स्मरण समस्त सन्तापों से उसका उद्धार कर देता है। या तो इन दोनों देवों के सान्निध्य के कारण उसे सन्ताप प्राप्त होता ही नहीं, या किन्हीं कर्मों के फलोन्मुख होने से सन्ताप प्राप्त होता भी है, तो उसे वह धीरज के साथ सह लेने में सक्षम होता है।

जिस पर आत्मा और परमात्मा का वरद हस्त पड़ जाता है, वह मानव-सुलभ कुटिलता के चक्र में भी नहीं पड़ता। अन्यथा अनात्मज्ञ व्यक्ति प्रायः कुटिल-वृत्तियों के वशीभूत हो जाते हैं। जिस पर आत्मा और परमात्मा का अनुग्रह हो जाता है, उसके प्रति कोई अन्य मनुष्य भी कुटिल व्यवहार करने का साहस नहीं करता। हम चाहते हैं कि इन इन्द्र-वरुण का प्रभाव हमें पाप-रहित, दुर्गति-रहित, सन्ताप-रहित और कुटिलता-रहित कर दे, जिससे हम निश्छल जीवन व्यतीत कर सकें।

संस्कृतार्थ :- १. देवा देवौ। २. इन्द्रावरुणा इन्द्रवरुणौ। ३. वी गति व्याप्ति-प्रजन-कान्ति-असन-खादानेषु। कान्तिः प्रीतिः। ४. परि ह्व कौटिल्ये। ५. नश व्याप्ति अर्थ में (निघं. २.१८)

सम्पादकीय

राष्ट्रोत्थान में शिक्षा तंत्र की भूमिका

भारत हमारा राष्ट्र है। हम इसकी गौरवशाली सन्तान हैं। हमारा चरित्र एवं आचरण, इसके गौरव तथा मर्यादा के अनुसार हो तथा हमारी शिक्षा-दीक्षा और कार्य-कलाप, इसके सम्मान को बढ़ाने वाले हों। यह है वह प्रेरणा और महत्वाकांक्षा जिसे मूर्त रुप देने के लिए स्वदेश-प्रेम, स्वाभिमान, सहिष्णुता, सेवा-भाव, स्वानुशासन, सद्व्यवहार, संगठन और स्वाध्याय आदि गुणों को शिक्षकों द्वारा अपने शिक्षार्थियों में उत्पन्न करने का प्रयास करना नितान्त आवश्यक है। शिक्षणालय के आचार्य बन्धु शिक्षणार्थियों के मन में भारत की महानता, भव्यता तथा पावनता के सम्बन्ध में, गौरव के भाव भरें क्योंकि कर्मठ और आदर्शवादी आचार्यों के सदाचरण का विद्यार्थियों पर विशेष प्रभाव होता है। शिक्षकों के आदर्श नेतृत्व में ही, आज के विद्यार्थी कल के आदर्श राष्ट्र-निर्माता बन सकने में समर्थ हैं।

हम उस देश में उत्पन्न हुए हैं जिस देश में योगीराज श्रीकृष्ण ने और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया, महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की, महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना की, युधिष्ठिर जैसे धर्मात्मा, ऋषि दधीचि जैसे दानी, महाराजा हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी, महर्षि दयानन्द जैसे वेदोद्धारक, लोकमान्य तिलक जैसे कर्मयोगी, महामना मालवीय जैसे निष्ठावान्, महाराणा प्रताप जैसे पराक्रमी, प्रणवीर, छत्रपति शिवाजी जैसे और गुरु गोविन्द जैसे कर्मवीर हुए। सीता, सावित्री और अनुसूया जैसे पतिव्रता नारियाँ हुई, गोस्वामी तुलसीदास और सूरदास जैसे भक्त हुए।

हमारा देश गौरवशाली है, वैभवशाली है। गंगा और गायत्री का देश है। ऋषि-मुनियों की घोर तपस्या, सन्तों की वाणी और यहां की सभ्यता और संस्कृति, हम सब की अमूल्य निधि है। शिक्षक बन्धुओं का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वे अपने छात्रों के हृदयों में शिक्षा के माध्यम से भारत का वह भव्य और पावन चित्र अंकित करें, जिसके परिणाम स्वरुप छात्र कोई ऐसा काम न करें, जो हमारे देश की संस्कृति, प्रतिष्ठा और मर्यादा के अनुकल न हो।

शास्त्र कहते है - '**क्रतुमयोऽयं पुरुषः, स यत्क्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते, यत्कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यते**' अर्थात् पुरुष क्रतुमय है, वह जैसा संकल्प करता है, वैसा ही आचरण करता है और जैसा आचरण करता है, फिर वैसा ही बन जाता है। कर्म का आधार विचार ही है। अतः स्पष्ट है कि अच्छे आचरण और सच्चारित्र्य के लिये अच्छे विचारों को मन में लाना आवश्यक है। अच्छे शास्त्रों का अभ्यास, श्रेष्ठ पुरुषों का सङ्ग करने और पवित्र वातावरण में रहने से अच्छे और शुभ विचार बनते हैं, बुरे कर्म और बुरे विचार छूट जाते हैं। अतः श्रेयस्कामी को सर्वदा-सर्वत्र सच्चिन्तन में ही लगे रहना है और बालकों को भी आदर्श राष्ट्र-निर्माण के लिये सच्चिन्तन में लगाना है।

वर्तमान युग में समस्त विश्व-चारित्र्य दौर्बल्य-व्याधि से पीड़ित है। भारत वर्ष भी, इस रोग के जबड़े के आभ्यन्तर में उत्तरोत्तर ग्रस्त होता जा रहा है। आए दिन समाचार-पत्रों के पन्ने घटित वीभत्स दुर्घटनाओं के समाचारों से ओत-प्रोत रहते हैं, आज के भारतीय जीवन में विचारों और भावों की उच्चता की चर्चा मात्र होती है। हम उच्च कोटि के भावराज्य का चिन्तन करते हैं, किन्तु चारित्रिक धरातल के निम्न रहने के कारण यह सब मात्र कल्पना की उड़ान बन कर रह जाता है। इसलिए अच्छे राष्ट्र के निर्माण के लिये यह आवश्यक है कि छात्र-बालकों का चरित्र उज्ज्वल हो। उनके जीवन में दैवी सम्पत्ति के लक्षणों का उद्भव और विकास हो। अतः स्थितप्रज्ञ, गुणातीत आदर्श महापुरुषों के जो लक्षण पड़ें। महाभारत में महापुरुषों के लक्षण बताए हैं उन्हें अपना आदर्श बनाकर अपने और अपने छात्रों के चरित्र को परिष्कृत करना चाहिये, ताकि हमारे राष्ट्र का भविष्य सर्वतोमुखी प्रतिभा से आलोकित हो उठे।

शास्त्रों में शिक्षक और शिक्षार्थियों के विचारों को संभालने के लिये विशेष ध्यान दिया गया है। छात्रों के कोमल और निर्मल अन्तःकरणों में, पहिले से ही जो संस्कार अंकित हो जाते हैं, वे ही उनका चरित्र-निर्माण करते हैं। इसलिए छात्रों को पहिले से ही श्रेष्ठ पुरुषों के सङ्ग में तथा सत्याशास्त्रों के अभ्यास में लगाना लाभदायक है। जैसे लोगों का संग होता है और जैसे लोगों से व्यवहार होता है और जैसा होने की उत्कट वाञ्छा होती है मानव वैसा ही हो जाता है। सद्विचारों के प्रसार से शिक्षणालय श्रेष्ठ चरित्र वाले छात्रों का निर्माण कर सकते हैं।

विद्यार्थियों के उज्ज्वल चरित्र से विश्व का अभ्युदय होगा। वृक्ष-वृक्ष से जंगल बनता है। यदि एक वृक्ष विकसित, पल्लवित, पुष्पित और फलित होता है तो वह वनश्री की वृद्धि ही करता है। इसी प्रकार समाज का एक-एक छात्र चरित्रवान् होकर, पूरे समाज को चरित्रवान् बनाने में योग दे सकता है। यदि इनसे प्रेरणा प्राप्त करके दूसरों ने भी अनुसरण् करना प्रारम्भ किया तो वह पूरे समाज की काया पलट कर सकता है। लौकिक अभ्युदय और पारमार्थिक कल्याण के लिए, धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत सदाचार की प्राथमिक आवश्यकता है। चरित्र-निर्माण का यही प्रथम सोपान है।

व्यक्तियों से समाज तथा समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। उन्नतिशील समाज तथा राष्ट्र के लिये व्यक्तियों का चरित्रशील होना आवश्यक है। शास्त्रानुकूल कर्म या व्यवहार ही चरित्र है। प्राचीन भारत में व्यक्ति

का सम्मान था, धन-वैभव का नहीं, इसीलिए भारतवर्ष में श्रीराम और सीता का सदाचार त्रिकालाबाधित सत्य की भान्ति मान्य है - स्वर्णमयी लंका के स्वामी रावण का नहीं। अतएव राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिए शिक्षणालयों के शिक्षकों को प्राचीन शिक्षा-पद्धति का अनुसरण करते हुए अपने विद्यार्थियों को आदर्श शुचिशील और चरित्रवान् बनाने का भरसक प्रयत्न करना है, ताकि आज के शिक्षार्थी महापुरुष बनकर राष्ट्र के गौरव, सम्मान, संस्कृति और देश-धर्म-मर्यादा की रक्षा करते हुए आदर्श आध्यात्मिक राष्ट्र-निर्माण में सफलता प्राप्त कर सकें।

हमारा राष्ट्र समग्र विश्व के लिए राष्ट्रीय चरित्र का सजग प्रहरी के रुप में था। आज असहिष्णुता, क्षेत्रीयता, अखण्ड, राष्ट्रीयता की भावना का अभाव, तुच्छ भाषागत विवाद आदि दुर्गुण हमारे अतीत के सभी उज्ज्वल चरित्र को धूमिल और विस्मृत कर चुके हैं। दुःस्थिति आकण्ठ निमग्न हो चुकी है। देश, राष्ट्र, समाज और व्यक्ति प्रतिक्षण अधोगामी होते जा रहे हैं। उन्हें निम्नगा होने से रोकना और उर्ध्वगामिनी बनाना अत्यन्त ही कठोर कार्य है, जो निष्ठा, तत्परता तथा दृढ़ संकल्प के बिना सम्भव नहीं है। अतः आवश्यक है कि राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण हेतु मानवीय प्रवृत्ति को उर्ध्वगामिनी बनाया जाये और निष्ठा, लगन तथा तत्परता से एतदर्थ राष्ट्र-व्यापिनी योजना चला कर, सैद्धान्तिक तथ्यों को शिक्षार्थियों के हृदयों में, शिक्षा के माध्यम द्वारा, अंकित करने का भगीरथ प्रयत्न किया जाए। इसी में राष्ट्रीय चरित्र की शाश्वत उपयोगिता निर्विवाद है।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में, प्रगति का कार्य तभी सम्भव है, जब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र परिस्थितियों की चुनौतियों को स्वीकार कर, संघर्ष करने के लिए तत्पर हों। यह भी एक तप है। उपनिषदों में कहा गया है कि ब्रह्म भी अपना विस्तार तप से ही करने में समर्थ होता है। यदि हम आज मानवीय हृदय की संकीर्णता को छोड़कर तप की शक्ति पहचान लें तो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र-इन सब के चरित्र को एक नया आयाम प्राप्त हो सकता है - ऐसा आयाम, जिस में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अपुनर्विवाद् के स्पर्श से आभूषित हो सके, धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों से संबंधित व्यक्तियों और शिक्षकों की शिक्षार्थियों में तप की इस शक्ति को सैद्धान्तिक रुप में समझना है और क्रियात्मक रुप में परिणत करने के लिए प्रयास करना है और चरित्र-निर्माण के उस जीवन-दर्शन को जो सत्य को सर्वोपरि मान कर चलता है, शिक्षार्थियों को हृदयङ्गम कराना है। आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि ही बालक छात्रों के स्वच्छ मन को दिव्य आलोक से अलंकृत करने में सक्षम है।

प्रत्येक शिक्षणालय, शिक्षक और शिक्षार्थी का अपने देश के प्रति महान् उत्तरदायित्व होता है। हमारा राष्ट्र भारतवर्ष धर्म और अध्यात्म-विद्या का स्रोत है। हमारी इस पवित्र मातृभूमि का मेरुदण्ड, मूलभित्ति या जीवन-केन्द्र एकमात्र धर्म ही है। इसलिए हमें इस धर्मप्राण राष्ट्र में धर्म की नीति के अनुसार चलना है। हमारा नैतिक आचरण उच्च व महान् हो। हमें अपने प्राचीन गौरव को सम्मुख रखकर, हिंसा-प्रतिहिंसा, द्वेष, अत्याचार और भ्रष्टाचार प्रभृति अनैतिक आचारों से बचना है। अपने राष्ट्रीय चरित्र के उत्कर्ष के लिये इच्छुक, लालायित और प्रयासशील होना है। यदि हमारे आचार्य और शिक्षक अपने शिक्षार्थियों को इस निर्दिष्ट पद्धति पर चलाने का प्रयास करें और उन्हें, उनके राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को हृदयङ्गम करा सकें, तभी अपूर्व महिमा से मण्डित भावी भारत राष्ट्र का पुनर्जागरण होगा।

- आचार्य कर्मवीर

वैचारिक

संकल्पशक्ति

- आनन्द प्रकाश गुप्त

(इस संसार में प्रत्येक वस्तु संकल्प-शक्ति पर निर्भर है।- डिजरायली)

इतिहास साक्षी है कि मानव की समस्त उपलब्धियाँ उसकी अदम्य संकल्पशक्ति का परिणाम हैं। उसकी असंभव सी लगने वाली सफल यात्राएँ, विजयी युद्ध, वैज्ञानिक खोज, क्रान्तियाँ और सार्थक सामाजिक बदलाव मात्र उसकी संकल्पशक्ति अर्थात् इच्छाशक्ति का ही प्रस्फुटन हैं। वैसे देखा गया है कि सभी को सफलता के रास्ते पता नहीं होते और जिन्हें रास्ते पता होते हैं उनमें से सभी अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाते। मात्र वही सफल हो पाते हैं जिनमें अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़इच्छाशक्ति होती है। यह इच्छाशक्ति की दष्ढ़ता का उदगम भी मनुष्य की वैचारिक चैतन्यता में ही निहित होता है। इच्छाशक्ति मनुष्य की चेतना में अन्तर्निहित एक ऐसा गुण है जो उसकी समाज में एक अलग पहचान बनाता है और कभी–कभी तो यह दष्ढ़–संकल्प इतना प्रभावोत्पादक और सकारात्मक संक्रमणकारी होता है कि वह व्यक्तिगत से प्रसारित हो सामाजिक रूप ले लेता है। वह व्यष्टि से समष्टि का रूप ले लेता है। विश्व की अनेक क्रान्तियाँ, समुद्री यात्राएँ, महापुरूषों के अवतरण और उनके चमत्कारिक प्रभाव, विभिन्न पंथों का उद्भव तथा लोकहित एवं राष्ट्रहित के लिए स्वयं को हंसते मुस्कुराते हुए लिये जाने वाले वह आत्मबलिदानी निर्णय, दृढ़ संकल्पशक्ति के कारण ही संभव हुए हैं। जीवन में असंभव कुछ भी नहीं है।

जीवन वास्तव में एक यात्रा है। सुख–दुःख जिसमें आने वाले पड़ाव हैं। इस यात्रा में कई रंग आँखों में उभरते हैं, कुछ गाढ़े कुछ फीके। उत्कंठा, उत्साह, साहस, खुशी, निराशा, कुंठा यह सब जीवन यात्रा के विभिन्न दष्श्य हैं। कभी खुशी के दिन ऐसे आते हैं कि हम उन्हें समेट नहीं पाते और कभी दुःख की बदली ऐसी छाती है कि हम रोशनी का इन्तजार ही करते रहते हैं, दुःख की रात काटे नही कटती। यह यात्रा समय की तरह अनवरत चलती जाती है। हाँ ! अलग–अलग व्यक्तियों के जीवन की कथा भी अलग–अलग होती है। कहीं पर परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं तो कहीं पर भीषण दुरूह और प्रतिकूल। जिनमें आत्म–विश्वास और प्रेरणा श्रोत की कमी होती है, वे जिंदगी में आई मुश्किलों से हार जाते है और जिनमें आत्मविश्वास की दष्ढ़ता होती है तथा जिन्होंने अद्भुत प्रेरक प्रसंगो को आत्मसात कर लिया होता है, वे जीवन में आयी कठिन परिस्थितियों का मुस्कुराते हुए, दष्ढ़तापूर्वक सामना करते हैं और कठिन से कठिन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दष्ढ़ इच्छाशक्ति के सहारे जीवन यात्रा में जीत हासिल करते हैं। हमारे राष्ट्र के इतिहास में ऐसे महामानवों तथा बलिदानी अनेक क्रांन्तिकारियों के जीवन वष्तान्त भरे पड़े हैं जिन्होंने कठिन से कठिन विपरीत और यातनामय परिस्थितियों में अपने दृढ़–संकल्प से समाज और राष्ट्र को धन्य किया है तथा एक नई एवं सफल दिशा दी है।

हम विश्व के ऐतिहासिक कैनवास पर दृष्टि डालने पर पाते हैं कि अनेक ऐसी महान विभूतियाँ हुई हैं जिन्होनें अपने अदम्य साहस से सामने खड़ी विकराल चुनौतियों को जीवन में घटित होने वाली निराशाजनक दुर्घटनाओं को अपने अदम्य साहस, उत्साह और जिजीविषा से ऐसी पटकनी दी है जिससे उनका जीवन एक ऐसे प्रकाश का जाज्वल्यमान श्रोत बना है जिससे अनेक व्यक्तियों ने अपने समाज और राष्ट्र की पूरी कहानी ही बदल डाली है। उस समाज और राष्ट्र की दुःखभरी अँधेरी काली रात खुशनुमा भोर के उजाले में बदल गयी है। इच्छाशक्ति कोई ऐसी चीज नहीं है जिसका क्रियान्वयन शून्य पर किया जावे। इच्छाशक्ति के लिए एक निश्चित और सुस्पष्ट लक्ष्य की आवश्यकता होती है। इसके पीछे युग–संदर्भ और तत्कालीन परिस्थितियों का एक जटिल जाल होता है। इसकी सही समझ और यथेष्ट निजी

इच्छाशक्ति अर्थात् दष्ढ़संकल्प का योग ऊर्जा श्रोत को उन्मुक्त कर देता है। इसी प्रक्रिया का परिणाम है जीवन का रूपांतरण। यही वह चीज है जिसने सामान्यजन के मध्य से महामानव पैदा कर दिये हैं। यही वह बात है जिसने सदियों में इंसानी चेतना को गढ़ा है।

इच्छाशक्ति एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो जीवन के परिवर्तन का नियामक है, परंतु इसकी नियामकता तभी सिद्ध होती है जबकि युग, समाज, चेतना के आपसी संबंध सुगठित हों और इच्छाशक्ति सामाजिक और सकारात्मक हो। हमारा जीवन कई तत्वों से निध ारित होता है। हमें जीवन से कई अपेक्षाएँ होती हैं, यह अपेक्षाएँ जितनी कम होंगी जीवन उतना ही अधि क सुखी होगा। दुःख का प्रतिरूप है अपेक्षा। बुद्ध कहते हैं कि "तृष्णा ही जीवन के सभी दुःखों का मूल कारण है।" तृष्णा का मूलोच्छेद करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। यह भी सत्य है कि जिन्हें समय से पूर्व और बिना श्रम के कुछ प्राप्त होता है वह उसे उतनी ही शीघ्रता गंवा भी देता है। यह प्राप्ति स्थायी नहीं होती क्योकिं सफलता तभी ठहरती है, जब आप में कुछ साबित करने के तत्व मौजूद हों। विश्व के सफलतम व्यक्तियों का कथन है कि "अपेक्षाओं की गठरी हमेशा किनारे ही रखिए। उन्हें खुद से जितना दूर रखेंगे, उतना ही अच्छा रहेगा।"

"दृढ़ संकल्प से प्रेरित सभी कार्य सफल होते हैं।" जब भी व्यक्ति दृढ़ संकल्पित होकर कोई कार्य हाथ में लेता है तो वह अपने लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो जाता है और वह अपनी कुशलता का सौ प्रतिशत उस कार्य को देता है। वह संसार से तो झूठ बोल सकता है पर अपने आप से नहीं। कभी–कभी किसी कार्य को संपन्न करने में देर लग सकती है क्योंकि सफलता कई रास्तों और उपायों से आती है। अनुभव और लगनशीलता अलग–अलग उपायों का श्रोत होते हैं। सफलता का रास्ता सदैव सुलभ नहीं होता वहाँ तो कभी पथरीली चट्टानें भी आ सकती हैं और कभी धसकने वाली रेत भी, पर संकल्पित व्यक्ति अपनी हिम्मत से अंततः राह को सुगम बना लेता है। जो विपरीत हालात में भी धैर्य और खुदी को बुलन्द रखता है, उसके रास्ते से बाधाएँ हटती ही हैं, भले ही उसमें कुछ देर लग जाये। किस्मत को कोसना और निकम्मेपन को ओढ़ना, आलसी और हारे हुए लोगों की निशानी है। जब पत्थर पर मुलायम रस्सी के आने–जाने से उसकी रगड़ के निशान उभर आते हैं तो असीम संभावनाओं से भरी इस दुनिया में क्या नहीं हो सकता? सही रास्ते की तलाश ही जीवन यात्रा का दूसरा नाम है और इस यात्रा में सही रास्ता हम तभी पा सकते हैं जब हम आशान्वित हो, आने वाली बाधाओं से टकराते हुए उन्हें पार कर लें। सफलता की छोटी सी किरण अंधेरी रात को भोर के उजाले में प्रस्फुटित करने के लिए पर्याप्त होती है क्योंकि जब अपने संकल्पित प्रयासों से हमें सही मार्ग मिलने लगता है तो सफलता की ओर हमारे कदम स्वयं ही अग्रसर होने लगते हैं। धम्म ज्ञान के अन्तर्गत निर्वाणगामी में अष्टांगिक मार्ग के अनुसार अपनायी जाने वाली जीवनचर्या को श्रेष्ठ बताया गया है। चार आर्यसत्यों का विश्लेषण करते हुए गौतम बुद्ध ने अपनी देशना में कहा है कि "कामना एक ज्वार है, प्रज्ञा उपलब्ध नौका है और विचारशक्ति उसकी पतवार है।" यह विचारशक्ति ही धम्म का "सम्यक संकल्प" है जो अष्टांगिक मार्ग के दूसरे क्रम में आता है। प्रथम तो सम्यक दर्षष्टि अर्थात् प्रज्ञापूर्ण ज्ञान व्यक्ति के अंदर से आता है और उस ज्ञान के व्यवहारिक प्रयोग के लिए उपयोग में लाया जाने वाला प्राथमिक प्रयास ही सम्यक संकल्प कहलाता है। धम्मपद में सम्यक संकल्पचित्त वाले के लिए कहा गया है कि " जिसका हित न माता–पिता कर सकते हैं और न ही अन्य जाति–बिरादरी के लोग उससे अधिक उसका हित सम्यक संकल्पयुक्त चित्त करता है।" धम्म में यह सामाजिक बुराई के मार्ग की ओर प्रशस्त करने वाले किसी भी कार्य को न अपनाने की तथा त्याग के लिए प्रबल इच्छा का होना यही सम्यक संकल्प है।

अंधकार से प्रकाश की ओर जाने के लिए मात्र प्रकाश या दर्षष्टि ही जरूरी नहीं है। यदि पथिक में आत्मविश्वास य संकल्पशक्ति ही न हो

तो वह भाग्य और नियति के सहारे अंधकार में ही गुम जायेगा। इस बात का महत्व हम बहुत सी बातें अपनी पौराणिक गाथाओं, नीति कथाओं, बोध कथाओं एवं बौद्धिक गल्प कहानियों के माध्यम से समझ सकते हैं। हमने अपने पौराणिक ज्ञान को वह महत्व नहीं दिया और उसे मात्र गल्पकथा और मनोरंजन का एक साधन मान बैठे। जबकि हमारे शास्त्र भारतीयता की श्रेष्ठ संस्कृति के वाहक हैं। वर्तमान परिस्थिति में हम देखते हैं कि हम भारतीय संस्कृति के नहीं, अपसंस्कृति के कर्णधार बनते जा रहे हैं इस संबंध में विद्वतजनों ने कहा है कि" हमारे मन में अंधकार का एक छोटा सा टुकड़ा था, वह बढ़ता गया, बढ़ता गया और अब चारो ओर अंधकार है। अगर वह प्रकाश होता तो! हमारा चित्त और चरित्र प्रकाशमान होता।"

आज प्रत्येक मनुष्य ज्ञात सुखों से अज्ञात सुखों की ओर अपने पैर पसार रहा है। वह सुख के लिए धन को ही प्रमुख साधन मान बैठा है जबकि यदि हम संकल्पित मन से अपने में गुणों और चरित्र को बढ़ायें और उनका व्यावहारिक उपयोग करें तो सच्चा सुख स्वतः ही सहज परिणाम के रूप में अपने समक्ष आ जायेगा। आवश्यकता है विवेकपूर्ण धैर्य के साथ सच्चे संकल्प की। हमें यह मानना ही होगा कि फल–फूल की प्राप्ति के लिए पौधे की टहनियों और पत्तों की अपेक्षा उसकी जड़ को खाद–पानी देना ही सटीक विधि है। संकल्प शक्ति और सही मार्ग से ही हम जीवन यात्रा को श्रेष्ठतर बना सकते हैं।

पता : ए.एस. ३०२, सुमंगल अपार्टमेंट, लिंक रोड,
बिलासपुर (छ.ग.)

थोड़ा सा बचा है

बहुत कुछ गया, मात्र थोड़ा बचा है।
करो याद तन-मन, लिए घूमते थे,
जहां मिल गये वो, वहां झूमते थे,
हुई याद धुंधली, कहाँ कुछ बचा है।।
बहुत कुछ ....।
वो लटके वो झटके, वो यारों की महफिल,
वो दरिया के तट पर, हुआ मन जो गाफिल,
होली के रंगों में, हुल्लड़ मचा है।
बहुत कुछ ....।
वो जीवन की आशा, वो रोटी की भाषा,
उड़न्तू-घूमन्तू बन, देते वो झाँसा,
आशीष सबके ये उपवन सजा है।।
बहुत कुछ ....।
मिलने-बिछुड़ने का, खेल है ये जीवन,
रहें साथ अब-अब, संगी औ परिजन,
मन में अभी तक तू ही बसा है।।
बहुत कुछ ....।

रचयिता : आनन्द प्रकाश गुप्त
बिलासपुर (छ.ग.)

"स्वस्थ बनो"

शेष जो बचा है
वो कफ है
थूक दो
कब तक संभालकर रखोगे गन्दगी
और हो जाओ स्वच्छ
लोभ, मोह, काम, क्रोध
घृणा, द्वेष, जोड़-घटाना
और बलवान होती
महत्वाकांक्षाओं की गन्दगी
साफ रहो
स्वच्छ बनो
ये क्या बात हुई
वो मैला
तो मैं भी मैला
स्वस्थ बनो
शुद्ध बनो

लेखक :
– देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर,
चन्दनगाँव छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
पिन - ४८००१

चिन्तन आर्यसमाज-पारस या सोना या...

- स्व. डॉ. पुष्पावती, पी.एच.डी., विद्या वरिधि,

जब आर्यसमाज का उदूभव हुआ, तब देश में निर्धनता, अविद्या तथा निर्बलता छाई हुई थी । महर्षि दयानन्द के उदय के साथ इस देश का शक्ति स्रोत खुला, उसी शक्ति स्रोत की धारा आर्यसमाज में संचरित हुई और आर्यसमाज के माध्यम से इस देश के सभी नागरिकों में संक्रमित हुई ।

आर्यसमाज में ऐसी ऊर्जा थी कि जो भी आर्य समाज के सम्पर्क में आता, वह स्वयं शक्ति केन्द्र बन जाता था । और देश धर्म पर मर मिटने की अमिट चाह उसमें जग जाती थी । शहीदे आजम भगत सिंह उनके पूर्वज, सुखदेव, राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद, लाला लाजपत राय, आजाद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाह, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, वीर लेखराम, स्वामी शुकदेव आदि इस शक्ति जागरण के ज्वलन्त उदाहरण है । इनके अतिरिक्त असंख्य स्व नाम धन्य आर्य जन हैं, जो मूक रुप से अपनी जागृत शक्तियों के साथ आर्यसमाज व राष्ट्र की नींव रुप बने रहे । जिन्होंने अपने ऊपर लोकैषणा को हावी नहीं होने दिया । तत्कालीन आर्यसमाज जागृत शक्तियो का इतना शक्ति शाली केन्द्र था कि इसके सम्पर्क में आ जाने पर कोई व्यक्ति सुप्त हृदय या निष्क्रिय नहीं रह सकता था ।

यहां तक कि जो व्यक्ति आर्यसमाज की वैदिक मान्यताओं को नहीं भी मानते थे, वे भी आर्य समाज की जागरण प्रक्रिया से अपने को अछूता नहीं रख सके थे । उनमें अन्तः जागृति के साथ विवेचना शक्ति प्रस्फुटित हुई, वे भी देश की पराधीनता, सामाजिक बुराइयाँ एवं अज्ञानता के कलंक से दुःखी व बैचेन हो उठे थे ।

वीर सावरकर गोखले लोकमान्य तिलक डॉ. अम्बेडकर तथा अन्य अनेक तत्कालीन राष्ट्रप्रेमी इसके स्पष्ट उदाहरण है इतना ही नहीं कांग्रेस के भी महान् व्यक्तित्व महात्मा गान्धी, नेहरु, सुभाषचन्द्र बोस, सरोजनी नायडू, सरदार पटेल आदि भी आर्यसमाज से प्रभावित रहे और आर्यसमाज द्वारा प्रचालित स्वतन्त्रता संग्राम, समाज सुधार, अछूतोद्धार, सती प्रथा-उन्मूलन, नारी स्वातन्त्राय, स्त्री, शिक्षा प्रसार, अन्धविश्वास व पाखण्ड निवारण आदि कार्यक्रमों को उन्होंने अपनाया । यदि वे स्पष्ट रुप से ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज के ऋण को स्वीकार कर लेते तो आज देश का नक्शा और ही होता, न तो राष्ट्र-विभाजन की दुर्भाग्यमय विभीषिका देखने को मिलती, न ही आतंकवाद, नक्सलवाद जैसी कुप्रवत्तियाँ यहां पर ताण्डव करती, न ही भारतीय जनता विदेशी संस्कृति के कुप्रभाव से गौरव विहीन होती , न ही भ्रष्टाचार का राक्षस जन जीवन का शोषण करता, न ही अभाव-भुखमरी की काली छाया देश वासियों को मरणासन्न करती । दूध घी की कौन कहे, आज जल तक का अभाव हुआ जा रहा है । आज महिला सशक्तीकरण कीं आवाज उठाने वालों के सामने कन्या भ्रूण हत्या, बलात्कार, दहेज की बलि वेदी पर युवतियों की बलि का वीभत्स खेल चल रहा है और इन कुकृत्यों को अंजाम देने वाले अपने को समाज के हितचिन्तक होने का दावा कर रहे हैं । महर्षि दयानन्द ने कुशल वैद्य के रुप में भारत देश व विश्व भर के जनसमुदाय की पीड़ा को समझा था और उसके निराकरण का उपाय भी बताया था । उन्होंने बहुमुखी कार्यक्रम दिया था, अतीत गौरव का बोध कराकर, वर्तमान के कूड़ा करकट को हटाकर उज्जवल गौरवमय सुख शान्तिपूर्ण भविष्य के निर्माण की विधि बताई थी, इसके लिए वैदिक व्यवस्थाओं का आधार दिया था । वेद ज्ञान क्योंकि सम्पूर्ण ज्ञान है, मानव जीवन को सर्वाङ्गपूर्ण व सुखी बनाने का जन्म से मृत्यु तक का सुनियोजित कार्यक्रम देता है । उसको अपनाने से निश्चय ही सम्पूर्ण मानव समाज पूर्णता की ओर अभिमुख हो सकता है । वैदिक व्यवस्थाओं का एक और चमत्कारी प्रभाव है कि वेदानुसार चलने से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सर्वविध शक्तियाँ स्वयमेव जागृत हो जाती है, जिससे मनुष्य को कर्त्तव्य पालन बहुत सहज हो जाता है,

और त्याग बलिदान से भी मन नहीं घबराता, महर्षि स्वयं बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे, और उन्होने सब बाधाएँ हंसते-हंसते पार कर लीं और देश धर्म की बलिवेदी पर उन्होंने अपने को सर्वशतः आहुत कर दिया।

स्वामी दयानन्द जी ने भावी भारत के लिये आर्यावर्त्त का चित्र दिया था। आर्यसमाज के प्रारम्भ काल में आर्यों में इतना उत्साह व आत्मिक बल था कि यदि उस समय उनके साथ भारतीय समाज जुट जाता तो आर्यावर्त्त का स्वप्न बहुत जल्दी साकार हो जाता। उस समय के आर्यों में एक ऐसी चुम्बकीय शक्ति थी कि जो भी उनके सम्पर्क में आता वह देश धर्म का दीवाना बन जाता, और उसमें सिर कटाने की तमन्ना जाग जाती तथा बाजुए कातिल के जोर को चुनौती देता। भारत धरा पर अलौकिक बल साहस प्रतिभा के प्रकाश पुंजों का एक समुदाय समवेत हो गया था जिसने विदेशी सत्ता को हिला दिया था, कुरीतियों पर तीव्र प्रहार किया था, अज्ञान तिमिर को भगा दिया था। समग्र संसार इस शक्ति के उदय को देखकर एक बार चकित रह गया था।

जो लोग वेद विरोधी थे, अन्ध विश्वासों की निशा जिन्हें प्यारी थी, वे भी प्रकट में कुछ नहीं बोल सके थे। उनकी बोलती बन्द हो गयी थी। काश! आर्यसमाज की यह शक्ति धारा सदा चलती रहती। वीरता की एक कमी कहो या दोष कहो, वीर हृदय स्वच्छ निश्च्छल एवं निर्लोभी होता है और होता है अपनी लक्ष्यगभिता में दत्ता-चित्त तथासत् प्रयत्नशील। अपनी निकटता व सरलता के परिवेश में वह दुष्टों, स्वार्थियों व छली लोगों की कुमंत्रणाओं को नहीं समझ पाता, परिणामतः दुष्ट छली व्यक्ति उसे बड़ी आसानी से अपना आखेट बना लेते हैं, और उसे अपनी प्रवंचनाओं के पाश में फंसा कर पंगु बना देते हैं।

यही दशा आर्यसमाज की भी हुई आर्यसमाज के बढ़ते प्रभाव व सफलता को देखकर आर्य विरोधी लोग रंगे सियार की तरह आर्य समाज के हरे भरे क्षेत्र में घुसकर अपने स्वार्थ में लग गये। तत्कालीन आर्यसमाजी आर्य जन उनके छल कपट को नहीं समझ पाए। उन्हें आर्यसमाज के क्षेत्र में प्रवेश करा दिया। इसका दुःखद परिणाम है कि आज आर्यसमाज कीगति शिथिल पड़ गई है वैदिक सिद्धांतों की अनदेखी हो रही है, वैदिक जीवन की व्यवस्थाओं का क्रियान्वयन ध्यान से ओझल हैं। जाति गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था के स्थान पर जन्मना जाति का ही विचार चल रहा है। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धाति ही चालू है, उसमें इंग्लिश मीडियम शिक्षा का विष और घुल गया है और आर्य नामधारी महानुभावों के बच्चे धड़ल्ले से उसमें प्रविष्ट कराये जा रहे हैं। तिस पर आर्यसमाज में गुटबन्दी का जहरीला सांप फन उठाकर फुंकार रहा है। निष्ठावान् आर्यों को तो अधिकारविहीन कर दिया गया है, बनावटी आर्य मनमानी कर रहे हैं।

संक्षेप में यह कहना उपयुक्त होगा कि आर्यसमाज जिसका स्वरूप पारस का था, सोना बना और अब मिट्टी की बनने को अग्रसर है। आर्यसमाज को यदि अपने शुद्ध रुप को पुनः प्राप्त करना है, तो एक ओर रंगे सियारों (कृत्रिम आर्यों) का निष्कासन करना होगा। दूसरी ओर वैदिक व्यवस्थानुसार जीवन क्रम निर्धारण करना होगा। और आर्यसमाज की सार्थकता इसी में है कि यह अपने प्रारम्भिक प्रगतिशील स्वरूप को प्राप्त कर देश की भटकती हुई जनता का मार्गदर्शन करें। आर्यसमाज पुनः पारस बन कर मिट्टी बन रहे भारतीय समाज को सोना बनाए, महर्षि के ऋण से उऋण होना सफल जीवन का गौरव प्राप्त करें।

पता : संचालिका, मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, वाराणसी

गुरुकुल होशंगाबाद में नवीन प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम होशंगाबाद (म.प्र.) में कक्षा छठवीं एवं सातवीं में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक जन दिनांक १५ जून से १५ जुलाई २०१७ के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं।

जानकारी हेतु निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें -

०९४२४४७१९८८, ०९९०७०५६७२६

भावत्कः - आचार्य सत्यसिन्धु आर्य

विश्लेषणात्मक

पुरोहित और उसके दायित्व

– नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

पुरोहित और उसके दायित्व को समझने से पूर्व हमेंपुरोहित के यौगिक अर्थ को जानना होगा। दरअसल हम मनुष्यों ने अपने स्वार्थ के वशीभूत और अपनी सुविधा के अनुसार प्रत्येक शब्द के संकुचित अर्थ गढ़ कर उनका अनर्थ कर डाला। पुरोहित शब्द भी उन्हीं शब्दों में से एक है जिसके अर्थ का अनर्थ कालान्तर में कर दिया गया। सामान्य रुप से हम पंडित कुल में पैदा हुए प्रत्येक व्यक्ति को जो कर्मकांड पूजापाठ आदि दक्षिणा लेकर करवाता हो उसे पुरोहित समझते हैं। यह पुरोहित शब्द के अर्थ का अनर्थ है क्योंकि वस्तुतः वर्ण व्यवस्था जन्मना नहीं अपितु कर्मणा होती है।

वेद की दृष्टि में पुरोहित का अर्थ है पुरः+हितः अर्थात् पुरः मायने सामने, हितः अर्थात जो सबका, समस्त मानव समाज का भला चाहने वाला हो। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जिसके लिए राष्ट्र का हित सर्वोपरि है और जो अपने स्वयं के स्वार्थ के वशीभूत कोई भी कार्य समाज व राष्ट्र के विरुद्ध नहीं करता और जिसका प्रत्येक कार्य समाज व राष्ट्र की उन्नति के लिए होता है वही पुरोहित कहलाने का अधिकारी होता है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के नियमों में इस सिद्धान्त को स्पष्ट रुप से स्थापित करते लिखा है **"हमें अपनी ही उन्नति में संतुष्ट ना रहना चाहिए सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"** इससे स्पष्ट हो जाता है कि पुरोहित कहलाने का अधिकारी वही है जो ना केवल वेदज्ञ ज्ञानी शक्ति संपन्न हो अपितु वह अपने इस प्राप्त सत्य ज्ञान का उपयोग सम्पूर्ण समाज व राष्ट्र के लिए करें। अतः ऐसा विद्वान जो अपने ज्ञान का दुरुपयोग अपनी स्वार्थ सिद्धि व दूसरों के नुकसान के लिए करे वह पुरोहित कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता।

यजुर्वेद के नौवें अध्याय के २३वें मन्त्र में **"वाजस्य प्रस्वः"** कहकर पुरोहित को वाज की उत्पत्ति बताया गया है। वाज का अर्थ है राष्ट्रीय विकास, उन्नति, रक्षा व चिंतन के सभी कार्य जो राष्ट्रीय संग्राम के अन्तर्गत आते हैं वाज कहलाते हैं। इन राष्ट्रीय संग्रामों में विजय प्राप्त करने के लिए व इनके कुशल संपादन के लिए जो अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर इस राष्ट्रीय संग्राम में सर्वस्व आहूत कर देता है वही अर्थात राष्ट्रीय संग्राम, वाज की उत्पत्ति पुरोहित कहलाता है। यही पुरोहित का यौगिक व विस्तृत अर्थ है। इसे जानकर हमें अपने राष्ट्र की उन्नति, विकास, चिंतन और रक्षा के लिए किए जाने वाले प्रत्येक संग्राम में अग्रणीय होकर उस राष्ट्र संग्राम का पुरोहित अपना सर्वस्व आहूत करते हुए बनना होगा। सरल शब्दों में यदि कहें तो समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए निरन्तर तीव्र गति से अर्ध्वगामी होकर बढ़ते और बढ़ाते जाना पुरोहित का कर्म और धर्म है।

पुरोहित के इन राष्ट्रीय संग्रामों के रचयिता, अग्रणी, मार्गदर्शक, वाजियों, पुरोहितों, राष्ट्रनायकों के लिए वेद में तीन स्पष्ट संदेश दिए हैं :-

१. **अग्रे सोमम् राजानाम् ओषधीषु सुसुवे** – सोम के समान राजा की प्रस्थापना।

२. **ता अस्मभ्यम् मधुमतीः भवन्तु** – प्रजाओं कर्मों को औषधी रुप और मधुमती बनाना।

३. **वयम् राष्ट्रे जागृयाम पुरः हिताः स्वाहा** – राष्ट्र हित को सामने रखते हुए जागरुक रहकर अपना सर्वस्व आहूत करना।

यजुर्वेद के नौवें अध्याय के २३वें मन्त्र में पुरोहितों का प्रथम दायित्व बताया गया है कि राष्ट्र हित को सामने रखकर किसका वरण राजा व राष्ट्राध्यक्ष के रुप में किया जाए। इस जन जागरण का कार्य पुरोहितों का है। राजा सोम के समान हो अर्थात् प्रजा के लिए राजा में वह २४ गुण हों जो सुश्रुत संहिता में सोम औषधि के लिए बतलाए गए हैं, जो उसे अमृत बनाते हैं। सरल शब्दों में राजा शत्रुनाशक

ओजस्वी बलवान धनऐश्वर्य का वर्धक, वृद्धों का आदर करने वाला और प्रजा के लिए सौम्य, शान्तिदायक व मधु के समान हो।

पुरोहितों का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है **"औषधिषु अप्सु"** अर्थात् राजा द्वारा पर्यावरण की दृष्टि से जल, राज्य व्यवस्था की दृष्टि से प्रजा और राष्ट्र की दृष्टि से कर्म को औषधि रुप अर्थात् **"अप्सु"** अर्थात दोषमुक्त बनाकर सुसेवित करना करवाना और सबको उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करना। सरल शब्दों में यदि कहें तो राजा और पुरोहित दोनों का कर्त्तव्य बनता है कि प्रजा का रोग, दोष और अभाव रहित कर सुसंस्कृत सुसभ्य और सुसंस्कारवान बनाए जिससे प्रजा का परस्पर व्यवहार मधुर हो, सब यथायोग्य धर्मानुसार प्रीतिपूर्वक बर्ताव करें। प्रत्येक अपनी उन्नति में संतुष्ट ना रहे अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझे। यह होती है प्रजा के मधुमती होने की भावना।

पुरोहित का तीसरा कर्तव्य है कि इस मधुमय राष्ट्र निर्माण आपसी भाईचारा व सहयोग बनाए रखने के लिए पुरोहित स्व आहूतिपूर्वक भाव से राष्ट्र निर्माण हेतु निरन्तर जागते और जगाते रहे। इसका अर्थ है कि ना तो पुरोहित स्वयं ना ही प्रजा को आलस्य, प्रमाद, तम के वशीभूत काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष जैसी कलुषित भावनाओं से ग्रसित ना तो सोने दें ना ही खुद सोये। यह तभी संभव है जब पुरोहित सम्पूर्ण समाज व राष्ट्र का चिंतन करते हुए पूर्ण रुप से सत्य क्रिया, नीति, वाणी के आधार पर समर्पित हो। सरल शब्दों में पुरोहित मन, वचन, कर्म से स्वयं भी जागरुक हो और लोगों को भी जगाए रखें। परहित की भावना से **इदन्न मम** के साथ अपने जीवन की आहूति देता हुआ जो निरन्तर जाग और जग रहा है वही अग्रणी नागरिक राष्ट्र में सच्चा पुरोहित है और वह उद्घोष करता है

"वयम् राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।"

पता: ६०२, जी.एच. ५३, सैक्टर २० पंचकूला (हरियाणा)

ओ३म् का नाम सदा मन में बसाना होगा

ओ३म् का नाम सदा मन में बसाना होगा।
सारे दोषों से रहित मन को बनाना होगा॥
जो अकायम है प्रभु सृष्टि कर्त्ता धर्त्ता।
इसके चरणों में सदा मन को झुकाना होगा॥
सर्व व्यापक है प्रभु कर्मों का फल दाता है।
अपने कर्मों को सदा नेक बनाना होगा॥
वे ही बन्धु और सखा माता-पिता है सबका।
अपना सर्वस्व सदा इसको बनाना होगा॥
जो हैं जन तजते इसे, ठोकरें खाते दर-दर।
ऐसे नर नारी का किस ठौर ठिकाना होगा॥
अब भी है वक्त सम्भल ओ३म् सिमर ले बन्दे।
आयु जब बीत गई फिर तो पछताना होगा॥
आदमी पतङ्ग और जिन्दगी डोर है।
हमारे हाथ कुछ नहीं, उड़ाने वाला और है॥

- आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, नई दिल्ली

तिरंगा

लहर-लहर लहराता अपना तिरंगा
हर जन का तन-मन हर्षाता तिरंगा
कश्मीर से कन्याकुमारी तक
अपनी अखण्डता का पैगाम तिरंगा॥

°

भारत माँ की अमर शान तिरंगा
शौर्य - वीरता की पहचान तिरंगा
तीन रंगों के बीच चक्र वीरता का,
शीश हिमालय मुकुट तिरंगा॥

°°

अद्भुत केसरिया-श्वेत -हरा तिरंगा
तीन रंग से मिलकर बना तिरंगा
राष्ट्र धर्म पर मर मिटने वालों का,
आन-मान-शान-अभिमान तिरंगा॥

°°°

- मुकेश कुमार "ऋषि वर्मा",
गाँव रिहावली, डाक-तारौली, (फतेहाबाद-आगरा) २८३१११

आध्यात्मिक

यज्ञीय बन प्राणायाम पूर्वक प्रभु अर्चन करें

- डॉ. अशोक आर्य

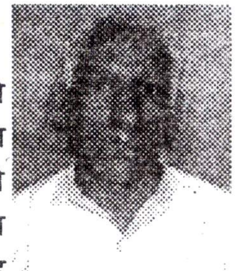

हम अपने जीवन को यज्ञमय बनकर परोपकार में लगावें। ऐसे पवित्र जीवन वाले बनकर हम प्राण-साधना अर्थात् प्राणायाम पूर्वक उस पिता का अर्चन करें, स्मरण करें। इस प्रकार हम प्रभु के सहस से उठकर सहस्तवान बनें। इस बात की ओर ही यह मन्त्र इस प्रकार संकेत कर रहा है -

अनवद्यैरभिदयुभिर्मखः सहस्वदर्चति।
गणैरिन्द्रस्यकाम्यैः॥ ऋ. १.६.८

इस मन्त्र में पांच बातों पर चर्चा करते हुए कहा गया है कि -

१. प्रभु स्तवन सहस बनें :-

प्रभु की उपासना करने वाला उस पिता का उपासक सदा गतिशील होता है। इतना ही नहीं यह उपासक कर्मशील भी होता है। वह निरन्तर गतिमान बने हुए कर्म करता है तथा ऐसा पुरुष मरुतों के साथ, मरुतों के सहाय से उस पिता की सबल अर्थात पूर्ण बल से, पूर्ण शक्ति से अर्चना करता है। प्रभु अर्चना की पहचान क्या है ? प्रभु अर्चना की तो पहचान यह ही है कि उसके उपासक में, उसके भक्त में, **"सहस"** उत्पन्न हुआ या नहीं। सहस की उत्पत्ति ही तो उसकी पहचान है। प्रभु सहोअसि हैं, वह पिता सहस के पुन्ज हैं। उनके पास सहस का अपरिमित भण्डार है। जब एक उपासक उस सहस के भण्डारी की उपासना करता है तो उस में भी उस पिता के गुण आने लगते हैं। जो उस पिता का उपासक होता है, उसमें उस पिता के गुणों का आधान होना ही होता है। इस कारण उपासक में सहस की उत्पत्ति निश्चित रुप से होनी ही चाहिए।

२. प्राण साधना से वासनाओं का नाश :-

जिन प्राणों की साधना से अथवा यूँ कहें कि जिस प्राणायाम के द्वारा अपने शरीर को पवित्र कर इस साधना पूर्वक इन्द्र प्रभु की अर्चना करता है (इन्द्र क्या है? अपने आप को किसी विशेष कर्म में सर्वज्ञ बनाना, पूर्ण निपुण करना ही इन्द्र है, किसी कर्म में पारंगत व्यक्ति को उस विषय का, उस कर्म का इन्द्र कह सकते हैं। जब एक व्यक्ति अप्रिमित साधना से, पूर्ण साधना से अपने विषय की विशेषज्ञता, मर्मज्ञता पा लेता है तो उसे उस विषय का इन्द्र कहा जा सकता है) ऐसे व्यक्ति के प्राण, उसे व्यक्ति के श्वास से वासनाओं का नाश हो जाता है, यह व्यक्ति वासनाओं से रहित हो जाता है। इसका ही परिणाम होता है कि मानव जीवन पाप रहित हो जाता है, इसके जीवन में पाप नहीं होते। वासनाएँ पाप का कारण होती है जब उसमें वासना ही नहीं है तो पाप कौन करेगा ? अर्थात् पाप होंगे ही नहीं।

३. प्राण साधना से उर्ध्वरेता :-

यह प्राण अर्थात् प्राणायाम से मानव उर्ध्वरेता होता है। भाव यह है कि प्राण साधना से मानव ऊपर की ओर, आकाश की ओर जाता है क्योंकि यह प्राण उसे आकाश की ओर ले जाने वाले होते है। यह तो वासना विनाश का एक स्वाभाविक कारण होता है। वासना की यह एक स्वाभाविक गति है कि वासना मानव के विनाश का कारण होती है तथा प्राण साधना वासना के विनाश का कारण होती है। जो व्यक्ति प्राण साधना पूर्वक वासनाओं का विनाश करने में सफल हो जाता है तो वह इतना ऊपर उठ जाता है कि अब उसके यह प्राण उसे आकाश की ओर ले जाने योग्य बन जाते हैं। वासना को व्रत्र भी कहते हैं, जिसका भाव पर्दे से होता है। इस कारण हम कह सकते हैं कि वासना एक पर्दे के समान होती है। जब तक हमारी आंखों पर वासना रुप पर्दा पड़ा हुआ है, तब तक हम किसी भी प्रकार का प्रकाश नहीं देख सकते। ज्यों ही हम प्राण साधना की सहायत से इस वासनाओं के परदे को हटाने में सफल हो जाते हैं त्यों ही ज्ञान का प्रकाश हमारे अन्दर प्रवेश करता है, ज्ञान का प्रकाश हमें दिखाई देता है।

४. प्राण जीवात्मा को चाहने वाले :-

प्राण को गण भी कहते हैं क्यों ? क्योंकि प्राण कभी एक नहीं होता। हम जो श्वासें लेते हैं इन्हें ही प्राण कहा जाता है, हम जो जीवित है, इन प्राणों के ही कारण है। श्वास निरन्तर चलते हैं, इस कारण यह एक हो नहीं सकते यह अनेक होने के कारण इन्हें यहां गण कहा गया है। अतः हमारे यह प्राण गण हैं, अनेक हैं। यह सांख्यान के योग्य हैं। इनकी संख्या होती है। संख्या उसकी ही हो सकती है, जो एक से अधिक हो। अतः यह प्राण संख्या में आने वाले होते हैं। संख्यान के योग्य होने से ही हमारे यह प्राण प्रशंसनीय भी होते हैं। इस कारण ही यह प्राण जीवात्मा को चाहने वाले भी होते हैं। जब तक प्राण चलते हैं, तब तक ही उनका जीवात्मा से मेल बना रह सकता है। इसलिए प्राण जीवात्मा को चाहने वाले होते हैं।

कौन से प्राम चाहने के योग्य होते हैं ? वह प्राण जो मनुष्य को उत्तम जीवन वाला बनाने में सहायक हों। जो प्राण मनुष्य को उत्तम जीवन वाला न बना सकें, उन प्राणों का क्या उपयोग है। इस कारण ही तो कहा जाता है कि मनुष्य प्रति दिन शुभ मुहूर्त से उठकर बाहर भ्रमण को जावे किसी नदी के तट पर या किसी नदी के तट पर या किसी बगीचे में जाकर आसन प्राणायाम करें, प्राण साधना करे ताकि उसके अन्दर शुद्ध आक्सीजन से युक्त प्राण वायु प्रवेश करें। ऐसी उत्तम वायु के प्राण के प्रवेश से वह उत्तम जीवन वाला बनता है, स्वस्थ शरीर वाला बनता है। अतः यह शुद्ध प्राण ही उसे उत्तम जीवन वाला बनाने में सहायक होते हैं। ऐसे उत्तम जीवन वाला होने से ही वह उत्कर्ष की ओर, उन्नति की ओर जाने वाला बनता है। इस प्रकार निरन्तर ऊपर उठते हुए वह परमात्मा से मिलाने का कारण भी बनते हैं।

५. पवित्र कर्मों से यज्ञशील बनें :-

इस प्रकार जो व्यक्ति प्राण की साधना पूर्वक अपना जीवन चलाता है, ऐसा व्यक्ति पवित्र कर्मों वाला होता है, ऐसे व्यक्ति के लिए गये कर्म सदा पवित्र ही होते हैं। ऐसे होते हुए वह यज्ञशील होता है, अर्थात वह प्रतिदिन तथा तथा प्रतिक्षण अनेक प्रकार के यज्ञों को करता रहता है। प्रातः सायं तो हवन के रुप में यज्ञ करता ही है, इसके साथ ही दिन भर के कर्मों में भी यज्ञीय भावना को बनाये रखता है। दूसरों की सहायता रुप परोपकार के कार्य करते हुए यज्ञ ही करता रहता है। इस प्रकार वह व्यक्ति यज्ञ का ही रुप बन जाता है।

पता :- १०४, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी-२०१०१०, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)

सिंह की मनस्विता

क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोऽपि शिथिलप्रायोऽपि कष्टां दशामा, पन्नोऽपिपन्नधीर्धृतिरपि प्राणेषु गच्छत्स्वपि।
मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भपिशितग्रासैकबद्धस्पृहः किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी ॥

भावार्थ - सिंह का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि - वह भूख से अत्यन्त कृश हो गया है, वृद्धावस्था की दुर्बलता भी जिस पर मंडरा रही है। समस्त इन्द्रियाँ जिसकी शिथिल हो गई, न तो उसमें पूर्व सदृश अजस्र शक्ति है, न तेज ही है, बहुत ही कष्टकारक स्थिति में आ गिरा। परन्तु इतनी कष्टमय बुद्धि के धारण करने पर भी, प्राणों के चले जाने पर भी-मदोन्मत्त बड़े-बड़े हाथियों के नाना प्रकार के गण्डस्थलों के रक्त की धारा से अपनी प्यास बुझाने वाला वह सिंह क्या अब पुराने व सूखे चारे तिनके की ओर दृष्टिक्षेप करेगा ? कदापि नहीं। वह चाहे मर जरूर जाएगा परन्तु मनस्वीजनों के स्वाभिमान की रक्षा करने वालों में अग्रणी-वह सिंह कभी सूखे घास की ओर अपनी आंख नहीं डालेगा। यही स्थिति- स्वभाव तेजस्वी-मनस्वी पुरूषों की है। कभी भी किसी भी विपदा में वे अपने आपको गिराते नहीं है। चाहे दुःख उठा लेंगे, मर जावेंगे परन्तु वे अपने स्तर पर दृढ़ासीन रहेंगे।

- सुभाषित सौरभ

गवेषणात्मक

स्वामी दयानन्द का यज्ञ विषयक दृष्टिकोण

(गृह्यसूत्रों के सन्दर्भ में)

-डॉ. उदयन आर्य,

वेद दुनिया की प्राचीनत पुस्तक है और उन वेदों को पढ़ने-पढ़ाने की श्रृंखला में वेदांगों का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। ये वेदांग हैं शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष।

कल्पसूत्रों के चार भाग हैं - श्रौत, गृह्य, धर्म और शुल्ब। प्रत्येक वेद के अपने-अपने गृह्यसूत्र हैं। गृह्य का तात्पर्य गृह्यस्थ आश्रम से है अर्थात् करणीय अकरणीय कर्मों का वर्णन गृह्यसूत्रों में प्राप्त होता है। मेरे द्वारा ऋग्वेद के तीनों ही गृह्यसूत्रों (आश्वलायन, शांख्यायन तथा कौषितकि) का विशेष अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ है कि पौराणिक जगत् में जितनी भी परम्परा यज्ञ के नाम पर प्रचलित हैं उनका कहीं-न-कहीं किसी न किसी रुप में सन्दर्भ गृह्यसूत्रों में ही प्राप्त होता है। ऋषि दयानन्द द्वारा भी बहुत सारी यज्ञ विधि-विधानों का सन्दर्भ भी गृह्यसूत्र ग्रन्थ ही है। अब प्रश्न यह है कि दोनों ही प्रकार की विधियों में कौन-सी विधि उपयुक्त या उचित मानी जाये? सायण, महीधर, उवट आदि भाष्यकारों ने भी वेदों के जिन मन्त्रों के अर्थ हिंसापरक अथवा अश्लीलता युक्त किया है वो कहीं-न-कहीं इन गृह्यसूत्रों की देन है। वस्तुतः स्वामी जी वेद को स्वतः प्रमाण मानते हैं तथा उनके सभी व्याख्या ग्रन्थों को परतः प्रमाण की श्रेणी में रखते हैं। यदि केवल मात्र गृह्यसूत्रों की विधि-विधान के आधार पर यजमान यज्ञ करना चाहे तो कदापि सम्पूर्ण यज्ञ नहीं कर सकता। किसी भी गृह्यसूत्रकार ने सम्पूर्ण यज्ञ से सम्बन्धी किसी भी विधि-विधान को पूर्ण रुप से उल्लेख नहीं किया है। जैसे यज्ञ की सामग्री कितनी और क्या होनी चाहिए? यज्ञ के समय किन मन्त्रों का पाठ होना चाहिए? वेदज्ञ अथवा वेदपाठी की योग्यता किस प्रकार की होनी चाहिए? इत्यादि अन्य अनेकों प्रश्नों का समाधान का पूर्ण विवरण ऋग्वेदीय गृह्यसूत्रों में प्राप्त नहीं होता है। ऋषि दयानन्द पहले वह व्यक्ति हैं जिन्होने उन-उन विधियों का ही उल्लेख एवं विधि-विधान दिया है जो वेद सम्मत, विज्ञान युक्त तथा प्राणिमात्र के हितकारक हैं। वस्तुतः गृह्यसूत्रों को पढ़ते समय यह विशेष अवधान देना चाहिए कि गृह्यसूत्रकार जिस-जिस विधि का वर्णन या उल्लेख करते हैं, वह सब प्रमाणिक नहीं है क्योंकि प्रत्येक विधि का गृह्यसूत्रकार समर्थन नहीं करते हैं। अपितु तत्तत्कालीन परम्पराओं का भी उल्लेख करते हैं और इस प्रकार के ग्रन्थों को पढ़ने से यह ज्ञात हो जाता है कि प्राचीन काल में किन-किन परम्पराओं का समाज में प्रचलन था। इन्हीं परम्पराओं के कारण पौराणिक जगत् में इन्हीं विधियों का उल्लेख मिलता है। स्वामी जी गृह्यसूत्रों से विशिष्ट एवं अति आवश्यक विधियों को लेकर सुन्दर सरल एवं सुव्यवस्थित यज्ञ का स्वरुप प्रदान किया है। इसलिए यह हमारे सामने यज्ञ परम्परा ऋषि दयानन्द द्वारा प्रणीत अतुलनीय एवं सारगर्भित है।

त्रयः पाकयज्ञाः हुता अग्नैहूयमाना अनग्नौ प्रहुता ब्राह्मभोजने ब्रह्मणि हुताः॥

इस प्रकरण से सुतरां स्पष्ट है कि अग्नि में आहुति करना तो यज्ञ है ही बिना अग्नि के बलिवैश्व कर्म भी यज्ञ ही है तथा साथ ही ब्राह्मणों को भोजन कराना भी यज्ञ ही कहा गया है। सायं प्रातः कालीन होम जिन्होंने केवल आहुति दान होता है उन्हें हुत कहा गया है। जिनमें हवि नहीं देते तथा बलि कर्म भी नहीं करते आदि क्रियाओं को आहुत कहते हैं। वे पाकयज्ञ जिनमें आहुति दान के साथ बलि कर्म भी होता है उन्हें प्रहुत कहते हैं। जैसे - यज्ञ, ब्राह्मण-भोजन आदि।

यज्ञ विभेद :-

शास्त्रीय परम्परा में यज्ञों को दो विभागों में विभक्त किया गया है। ऋति अर्थात् वेद में विहित श्रौत और स्मार्त यज्ञ अर्थात् गृह्यसूत्रों में वर्णित स्मार्तयज्ञ। साक्षात् वेद

संहिताओं में यज्ञों के नाम तो यत्र-तत्र प्राप्त होते हैं परन्तु कोई क्रमिक विभाग प्राप्त नहीं होता है। वस्तुतः कात्यायन के **"मन्त्रब्राह्मणयोवेदर्नामधेयम्"** इस कथन के अनुसार मन्त्र संहिता और तद् व्याख्यानभूत ब्राह्मणों को वेद मानने के कारण ब्राह्मणग्रन्थों में विशद रुपेण वर्णित यज्ञों को श्रौत यज्ञ कहा गया है। **ये पांच है - १. अग्निहोत्र, २. दर्शपौर्णमास, ३. चातुर्मास, ४. निरुढ़पशुबन्ध, ५. सोमयाग** । स्मृति-विहित यज्ञों को स्मार्त कहा जाता है। वस्तुतः इन यज्ञों का मूल स्रोत गृह्यसूत्र है। विभिन्न स्मृतियों मनुस्मृति आदि में भी इन यज्ञों का वर्णन गृह्यसूत्रों की अपेक्षा अधिक लोक प्रचलित होने से इन यज्ञों को स्मार्त संज्ञा प्राप्त हुई है।

आश्वलायन ने वेदाध्ययन को ब्रह्मयज्ञ कहा है। परन्तु ऋषि दयानन्द प्रातः व सायंकाल ब्रह्मयज्ञ की विधि में सन्ध्योपासना का विधान करते हैं तथा यह प्रत्येक आर्य के लिए नित्य कर्म कहकर उसकी आवश्यकता को बतलाते हैं। यहां स्वामी जी का अभिप्राय यह है कि प्रातःकालीन ब्रह्मयज्ञ में व्यक्ति द्वारा किए गए रात्रिकाल में पापाचरण का प्रायश्चित करते हुए रात्रिकालीन दिनचर्या का मूल्यांकन करना तथा सायंकालीन ब्रह्मयज्ञ का उद्देश्य दिवसीय पापाचरणों का प्रायश्चित तथा दिवसीय कार्यों का मूल्यांकन करना। आश्वलायन स्वाध्याय के अन्तर्गत ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, कल्प, गाथा, नारावंशी, इतिहास और पुराणों के ग्रन्थों का अध्ययन बतलाते हैं। अर्थवाद के रुप में आश्वलायन कहते हैं जो कि ऋग्वेद का अध्ययन करता है। उसके पितरों के लिए दूध की नदियाँ स्वधाकार से साथ प्रवाहित होती है। इत्यादि अन्य ग्रन्थों के अध्ययन का महत्व अर्थवाद के रुप में बतलाते हैं। वेदों का स्वाध्याय स्वयं करने से पितरगण कैसे तृप्त होंगे ऐसा कोई प्रयोजन या महत्व गृह्यसूत्रकार नहीं बतलाते हैं। साधारण रुप से सभी यह स्वीकार करते हैं कि जो जैसा प्रयत्न और पुरुषार्थ करेगा उसका फल उसको ही मिलता है। परन्तु यहां पर विपरीत दिखाई दे रहा है कि ब्रह्मयज्ञ का फल पितरों की तृप्ति के लिए है। कहीं-न-कहीं इस प्रकार के विधि-विधानों का प्रयोजन या महत्व विद्वानों के लिए पुनः विचारणीय है। ब्रह्मयज्ञ के प्रकरण में शांखायन सन्ध्योपासना कर्म कहकर विधान करते हैं कि जंगल में जाकर समित्पाणिः होकर नित्य मौन धारण कर उत्तर की मुख करके अन्वष्ट देश में नक्षत्रों के दर्शन से पूर्व में सन्ध्या करता है। कुछ रात्रि व्यतीत होने पर महाव्याहुतिपूर्वक सावित्री मन्त्र और स्वस्त्यन को जप करके फिर सन्ध्या करता है, इसी प्रकार प्रातः प्राङ्मुख बैठता हुआ सम्पूर्ण सूर्य के दर्शन पर्यन्त सन्ध्या करनी चाहिए। सूर्य देव के समुदित हो जाने पर स्वाध्याय करना चाहिए। ऋग्वेदीय गृह्यसूत्रकारों ने ब्रह्मयज्ञ के सन्दर्भ में कोई विशेष व्याख्या, विधि तथा किन मन्त्रों का पाठ करना चाहिए आदि कुछ भी विस्मृत विवरण नहीं दिया है। कहीं-न-कहीं इस यज्ञ के विधि में अपूर्णता प्रतीत होती है। अगर कोई व्यक्ति गृह्यसूत्रकारों के अनुसार ब्रह्मयज्ञ करना या कराना चाहे तो शायद यह कार्य सम्भव नहीं है। दुखद तो यह भी है कि ब्रह्मयज्ञ का विशेष प्रयोजन भी नहीं दिया है। बहुधा यह सुनने में आता है कि वेदांग और उपांग वेद के सहायक ग्रन्थ हैं। परन्तु मेरे द्वारा विस्तृत ऋग्वेदीय गृह्यसूत्रों के अध्ययन के उपरान्त ऐसा कोई तथ्य प्रतीत नहीं होता।

पौराणिक परम्परा में जो विज्ञान विरुद्ध बातें दिखाई देती हैं वे इन्हीं गृह्यसूत्रों की देन है। यथा श्राद्ध, तर्पण आदि अन्य गृह्यकर्म वर्णित है। आज के लेख में इतना ही पर्याप्त है आगामी लेक में देवयज्ञ के विषय में गृह्यसूत्रों के अनुसार महत्व और विधि के बारे में चर्चा करेंगे .

शोध करते समय शोधार्थी को किसी भी मत के विषय में पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए और मैंने भी इस परम्परा का पालन किया है। संक्षेप में यही कहना चाहता हूं कि जो अमूल्य व अतिमहत्वपूर्म विधि-विधान, प्रयोजन, उपयोगिता, सुव्यवस्थित मन्त्रों का संग्रह ऋषि दयानन्द द्वारा प्रणीत संस्कार विधि आदि अन्य ग्रन्थों में प्राप्त होता है। वैसा अन्यत्र प्राप्त नहीं है। विशेष महत्व इस बात का भी है स्वामी जी द्वारा प्रणीत विधि अतीव सरल है साथ ही साथ उसकी उपयोगिता भी स्वतः सिद्ध है। आगामी चर्चा अगले अंक में देवयज्ञ के विषय में करेंगे।

पता : प्राचार्य, गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतालपुर, जिला-जालन्धर-१४४८०१ (पंजाब)

स्वर्णिम स्मृति

"सच्चे देश भक्तों के आदर्श जीवित शहीद वीर विनायक दामोदर सावरकर"

- मनमोहन कुमार आर्य

भारत की गुलामी का कारण देश व मनुष्य समाज का वेदपथ से पददलित होना और अज्ञानता व अन्धविश्वासों के कूप में गिरना था। महाभारत के युद्ध में अनेक भयंकर परिणामों में से एक दुष्परिणाम यह था कि देश वेद पथ व वैदिक धर्म से दूर हो गया, जिसका परिणाम धार्मिक व सामाजिक अज्ञानता, अन्धविश्वास, मिथ्या, सामाजिक परम्पराओं के रुप में हुआ। लगभग ५ हजार वर्षों तक यह स्थिति बनी रही और दिन प्रति यह वृद्धि को भी प्राप्त होती रही। सन् १२ फरवरी १८२५ को महर्षि दयानन्द जी जन्म गुजरात प्रदेश की मौरवी रियासत के टंकारा नाम ग्राम होता है। सच्चे ईश्वर की खोज व मृत्यु पर विजय पाने के लिए वह घर से निकल पड़ते हैं।

लगभग १४ देश भर में घूमकर वह योग विद्या सीखते हैं व उसमें पारंगत हो जाते हैं। विद्या प्राप्ति की उनकी अभिलाषा सन् १८६० में मथुरा में गुरु विरजानन्द सरस्वती जी के अन्तेवासी शिष्य बनकर उनसे संस्कृत की आर्ष व्याकरण का अध्ययन कर व गुरु से मिली अनेक प्रकार की जानकारियों से पूर्णहोती है। गुरु की प्रेरणा व स्वविवेक से उन्होने अपने भावी जीवन का उद्देश्य देश की गुलामी एवं सभी समस्याओं के मूल कारण अविद्या पर प्रहार करने व सत्य वेद मत के प्रचार व प्रसार को बनाया। सभी उन्नतियों की उन्नति का आधार विद्या होती है, जिसके लिए अविद्या का नाश ही एक मात्र उपाय है।

संसार में विद्या का स्रोत एकमात्र वेदों का सत्य ज्ञान है। इस मूल मंत्र को पकड़कर स्वामी जी आगे बढ़ते हैं और वेद प्रचार के साथ साथ अज्ञान, सभी अन्धविश्वास, मिथ्या सामाजिक परम्पराओं किंवा अविद्या पर प्रबल प्रहार करते हैं। उसी का सुपरिणाम आज हम देश की सर्वांगीण उन्नति के रुप में पाते हैं। महाभारत काल तक तो भारत विश्व गुरु था ही, ऋषि दयानन्द जी की कृपा से आज भी भारत अध्यात्म विद्या, जो समस्त विद्याओं का केन्द्र है, के कारण विश्व गुरु है और हमेशा रहेगा। भगवान मनु का श्लोक भी याद आता है जिसमें वह कहते हैं **'एतद्देशस्य प्रसुतस्य साकाशादग्रजन्मः। स्वं स्वं चरित्रेन शिक्षरेन् पृथ्वियां सर्वमानवाः'** अर्थात् हमारा यह आर्यावर्त वा भारत देश सारे संसार में विद्वानों को उत्पन्न करने वाला विद्याओं का केन्द्र है। संसार के सभी लोग भारत आकर अपने योग्य सभी प्रकार की विद्या व चरित्र की शिक्षा लेते थे। महर्षि दयानन्द ने भारत को पुनः उसी प्राचीन स्थिति में ला दिया है। देश की आजादी भी उनके विचारों को केन्द्र में रखकर आन्दोलन करने से प्राप्त हुई है। सन् १८५७ की प्रथम स्वातन्त्र्य क्रान्ति के समय में उनका अज्ञात जीवन बिताना, भूमिगत होना वा बाद में भी उसका विवरण प्रकट न करना उनके प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रमुख भूमिका होने की ओर संकेत करता है। उनके साक्षात् शिष्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा क्रान्तिकारियों के प्रथम गुरु रहे और उन्हीं के शिष्य विनायक दामोदर सावरकर थे। २८ मई २०१७ को उनकी १३४वीं जयन्ती है

कालापानी अण्डमान की सेलूलर जेल में बैल की जगह घानी में जुते हुए, तेल पेरते हुए आजीवन कारावास के कैदी स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर जी सावरकर

। इस अवसर पर उनका स्मरण व स्वयं को देश की रक्षा के लिए समर्पित करना प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य व धर्म है । जो देशवासी ऐसा करता है वह प्रशंसनीय है । संसार में उपासनीय तो केवल ईश्वर है परन्तु पृथिवी, वेदमाता व गोमाता के हमारे ऊपर इतने उपकार हैं कि यह मातायें उपासनीय न होकर भी हमारी श्रद्धा एवं प्रेम की अधिकारिणी हैं । हम इस अवसर पर हम वेदमाता, भारतमाता व गोमाता का वन्दन भी करते हैं ।

वीर विनायक दामोदर सावरकर जी का बचपन का नाम तात्या था । आपका जन्म २८ मई १८८३ को ग्राम भागूर जिला नासिक में हुआ था । घर में आपके माता-पिता और तीन भाई थे । घर में प्रतिदिन भगवती दुर्गा की पूजा होने के साथ रामायण व महाभारत की कहानियाँ भी बच्चं को सुनने को मिलती थी । महाराणा प्रताप व वीर शिवाजी के वीरतापूर्ण प्रसंग भी आपका माता-पिता से सुनने को मिलते थे । १० वर्ष की आयु में आपकी माता राधाबाई जी का देहान्त हो गया । आप गांव के प्राइमरी स्कूल में पढ़ते थे । बचपन में शस्त्र चलाने का अभ्यास भी करते थे । कुश्ती का शौक भी आपको हो गया था । इन्हीं दिनों आपके इलाके में प्लेग फैला । एक एक करके बिना इलाज लोग मरने लगे । अंग्रेजों के इस बीमारी की रोकथाम के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं किया, जिससे सावरकर जी और क्षेत्र के लोगों में सरकार के प्रति रोष उत्पन्न हुआ । **इसी कारण चाफेकर बन्धुओं ने वहां के अंग्रेज कमिश्नर की हत्या कर दी । अंग्रेजों द्वारा मुकदमें का नाटक किया गया और इन वीर चाफेकर पुत्रों को फांसी दे दी गई । इससे व्यथित वीर सावरकर जी ने निर्णय किया कि इस अन्याय का बदला अवश्य लेंगे** । बड़े होकर आप नासिक जिले के फर्ग्युसन कालेज में पढ़ने के लिए गये। यहां आपने **"मित्र-मेला"** नाम की देश भक्त युवकों की एक संस्था बनाई । इसका सदस्य बनने के लिए युवकों को यह घोषणा करनी पड़ती थी कि आवश्यकता पड़ने पर वह देश पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देंगे । सभी सदस्य लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक द्वारा प्रकाशित देशभक्ति से पूर्ण पत्र केसरी व अन्य पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ते थे । महाराणा प्रताप व वीर शिवाजी की जयन्तियां भी आपके द्वारा मनाई जाती थी । २२ मार्च १९०१ को इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया का देहावसान हुआ । अंग्रेजों द्वारा देशभर में शोक मनाये जाने की घोषणा की गई । तात्या ने मित्र-मेला संगठन की बैठक बुलाई और उसमें भाषण दिया । आपने भाषण में कहा कि **महारानी विक्टोरिया हमारे देशवासियों की शत्रु थी, उन्होने हमें गुलाम बनाया हुआ है । हम उनके लिए शोक क्यों मनायें ?** समाचार पत्रों में इससे संबंधित समाचार प्रकाशित होने से अंग्रेजों को इस घटना का पता चला और सावरकर जी को फर्ग्युसन कालेज से निकाल दिया गया । लोकमान्य तिलक को इस घटना का पता चलने पर उनके मुंह से निकला कि **लगता है कि महाराष्ट्र में शिवाजी ने जन्म लिया है** । इसके बाद तिलक जी ने सावरकर जी को बुलाकर उनके शौर्य की प्रशंसा की और उन्हें आशीर्वाद सहित सहयोग का आश्वासन दिया ।

देश के लोगों में देशभक्ति की भावना भरने के लिए तिलक जी के आशीर्वाद से अपने विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का आन्दोलन चलाया जो अपेक्षा के अनुरुप सफल रहा । देश भर में स्थान-स्थान पर विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई, जिससे देशवासी अंग्रेजों की गुलामी से घृणा करने लगे । इस पर लोकमान्य तिलक जी ने कहा कि यह आग विदेशी साम्राज्य को भस्म करके ही दम लेगी । बी.ए. पास करने के बाद आपने लंदन जाकर वहां से वकालत करने का निर्णय लिया । ९ जून सन् १९०६ को आप लन्दन के लिए रवाना हुए और वहां पहुंच कर महर्षि दयानन्द के साक्षात शिष्य व क्रान्तिकारियों के आद्यगुरु श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के इण्डिया हाऊस में निवास किया जहां पहले से अनेक क्रान्तिकारी युवक रहा करते थे । यहां आकर आपने पहला काम अंग्रेजों द्वारा लिखित भारत के इतिहास को पढ़ा । आपने अपनी अन्तर्दृष्टि से जान लिया कि यह इतिहास पक्षपातपूर्ण है जिसमें भारतीयों से न्याय नहीं किया गया है। आपने भारतीयों का सच्चा इतिहास देशवासियों के सामने लाने का निर्णय किया । आपने कुछ ही काल में कई पुस्तकों की रचना कर डाली । आपकी एक प्रमुख कृति **सन् १८५७ का भारत का प्रथम स्वातन्त्र्य समर है** जिस पर प्रकाशन से पूर्व ही अंग्रेजी सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया गया जो विश्व इतिहास की प्रथम घटना थी । **"नेताजी सुभाषचन्द्र**

बोस तथा क्रान्तिकारी शहीद भगतसिंह जी ने इस पुस्तक को पढ़ा और इसे भारी संख्या में छपवाकर युवकों में निःशुल्क वितरण कराया।" यह पुस्तक लन्दन में लिखी गई और वहां से प्रतिबन्ध लगने पर भी भारत कैसे पहुंच गई, यह एक रहस्य है ? हमने यह पुस्तक पढ़ी है और हम अनुभव करते हैं कि प्रत्येक भारतीय को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। विदेशी जुल्मी सरकार के होते हुए इतिहास के इतने अधिक तथ्यों को इकट्ठा करना और अल्प समय में उसे रोचक रुप में प्रस्तुत करना एक आश्चर्यजनक घटना है जिसका अनुमान पुस्तक को पढ़कर ही लगाया जा सकता है।

आप इटली के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी मैजिनी से इतने अधिक प्रभावित थे कि आपने इन पर पुस्तक की ही रचना कर डाली। विदेशों मे रहने वाले भारतीय मूल के लोगों को देशभक्ति की शिक्षा देने के लिए आपने सन् १८५७ की क्रान्ति के स्मृति दिवस के अवसर पर इसके तीन प्रमुख अमर हुतात्माओं वीर कुंवर सिंह, मंगल पाण्डे तथा रानी लक्ष्मी बाई को स्मरण करने का निर्णय किया और विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को सुझाव दिया कि वह इस दिन अपने कोट पर एक बिल्ला लगायें जिस पर लिखा हो कि **"सन् १८५७ की क्रान्ति के शहीदों की जय।"** इस घटना से इंग्लैण्ड की सरकार चौंक गई और वीर सावरकर के विरुद्ध खुफिया निगरानी और बढ़ा दी गई। भारतीय युवक मदनलाल ढींगरा जी ने लन्दन में वीर सावरकर जी से कर्जन वायली की हत्या के विषय में विस्तृत बातचीत की तथा दोनों में योजना पर सहमति हुई। ११ जुलाई १९०९ को लन्दन के जहांगीर हाल में एक बैठक में भारतीयों पर अत्याचारों के दोषी कर्जन वायली हुई। पूर्व जानकारी प्राप्त करके मदनलाल ढींगरा और वीर सावरकर आदि क्रान्तिकारी वहां पहुंच गये। बैठक के दौरान **प्राणवीर मदनलाल ढींगरा की पिस्तौल से गोली चली और कर्जन वायली वहीं ढेर हो गये।** एक अंग्रेज ने ढींगरा जी को पकड़ने की **कोशिश की और वह उनकी पिस्तौल की गोली से अपने प्राण गंवा बैठे।** इस घटना के परिणाम स्वरुप श्री ढींगरा को १६अगस्त १९०९ को लन्दन में फांसी दे दी गई। कर्जन वायली की हत्या के विरोध में एक निन्दा प्रस्ताव पारित करने के लिए सर आगा खां ने लन्दन में एक बैठक का आयोजन किया। शोक प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ जिसमें कहा गया कि हम अब सर्वसम्मति से कर्जन वायली की हत्या की निन्दा करते हैं। इसके विरोध में वहां बैठे वीर सावरकर खड़े हुए और दृढ़ता से बोले कि सर्वसम्मति से नहीं, मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूँ। इससे अंग्रेजों को कर्जन वायली की हत्या में वीर सावरकर का हाथ होने का शक हुआ, उन पर निगरानी अब पहले से अधिक कड़ी कर दी गई। मित्रों के परामर्श से वह पेरिस चले गए, परन्तु वहां मन न लगने पर परिणाम की चिन्ता किये बिना लन्दन लौट आये।

वीर सावरकर जी के पेरिस से लन्दन वापिस आते ही उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। १५ सितम्बर १९१० को उन पर मुकदमा चला और २३ जनवरी १९११ को उन्हें आजीवन कारावास का दण्ड सुनाया गया। इसके बात मेरिया नामक जहाज में बैठा कर उन्हें भारत भेजने का प्रबन्ध किया गया। जहाज के चलने पर वह चिन्तन मनन में खो गए। उन्हें जहाज में एक अंग्रेज पत्रकार से पता चला कि देश की आजादी के लिए आन्दोलन करने के कारण उनके दो भाई भी भारत की जेलों में हैं। इस पर उनकी प्रतिक्रिया थी कि मुझे गर्व है कि मेरा पूरा परिवार ही भारत की दासता की बेड़ियों से मुक्त कराने के कार्य में संलग्न है। जेलों में पड़कर जीवन समाप्त करने की अपेक्षा उन्होंने भारत माता के लिए कुछ ठोस कार्य करने के बारे में सोचा। इसके लिए उन्होंने जहाज से भागने का विचार किया। वह शौचालय में गये और उसकी एक खिड़की या रोशनदान को उखाड़कर उससे समुद्र में कूद पड़े। अंग्रेज पुलिस उन पर गोलियों की बौछार करने लगी और वह तैर कर आगे बढ़ रहे थे और अधिकांश समय पानी के अन्दर ही रहते थे। इस स्थिति में उन्होंने पास के किसी द्वीप में पहुंचने का निर्णय किया। वह फ्रांस के एक द्वीप पर पहुंच गये जहां के सिपाही ने सावरकर जी के गिरफ्तार करने के निवेदन को अनसुना कर उन्हें ब्रिटिश सैनिकों को सौंप दिए। उनके शरीर पर बेड़ियां डाल दी गई जिससे वह हिल-डुल न सकें। इस प्रकार उन्हें एक नाव से उसी जहाज पर लाकर, जिससे वह कूद पड़े थे, भारत पहुंचाया गया जहां उन पर फिर मुकदमा चला और उन्हें कालापानी की

सजा दी गई। उनकी सजा को दो जन्मों के कारावास की थी जिसके अन्तर्गत उन्हें ५० वर्षों तक कालापानी में बिताने थे। दो जन्मों की सजा सुनाये जाने पर भी सावरकर जी मुस्कराये थे और जज को कहा कि आप ईसाई लोग तो बाईबिल के अनुसार दो जन्म मानते ही नहीं है फिर आपका मुझे दो जन्मों का कारावास देना हास्यास्पद ही है।

इस सजा को काटने के लिए उन्हें अण्डमान निकोबार की पोर्टब्लेयर स्थित कालापानी की जेल में भेज दिया गया। **कालापानी में वीर सावरकर जी को कोल्हू में बैल के स्थान पर जुतना पड़ता था और प्रतिदिन ३० पौंड तेल निकालना पड़ता था। बीच बीच में गर्मी से लोग मूर्छित भी हो जाते थे। ऐसा होने पर कोड़ों से कैदियों की पिटाई होती थी।** खाने की स्थिति ऐसी थी कि बाजरे की रोटी व स्वादरहित सब्जी जिसे निगलना मुश्किल होता था। पीने के लिए पर्याप्त पानी भी नहीं मिलता था। दिन में भी शौच आने की अनुमति नहीं मिलती थी और बात बात पर गालिया दी जाती थी।

ऐसे यातना ग्रह में रहकर इस महान चिन्तक और देशभक्त ने १० वर्षों तक जीवन व्यतीत किया। कालापानी में वीर सावरकर जी ने जो यातनाएँ सहन की उसे हमारे सत्ता का सुख भोग चुके वा भोगने वाले सोच भी नहीं सकते। यह उनकी कृतघ्नता कही जा सकती है। यही कारण है कि सरकारों ने उन्हें देशभक्ति के विचारों व देश के लिए सहन की गई कालापानी की अमानवीय सजाओं की उपेक्षा की और उन्हें वह सर्वोच्च मान-सम्मान नहीं दिया जिसके वह अधिकारी थे व है। वीर सावरकर जी का बलिदान किसी भी बड़े से बड़े सत्याग्रही से कहीं अधिक बड़ा बलिदान था, ऐसा हम अनुभव करते हैं। हमने पोर्ट ब्लेयर जाकर कालापानी की उस जेल को देखा है जिसमें सावरकर जी रहे और उन यातनाओं को भी अनुभव किया है जो उनको दी गई थी। आज भी वह कोल्हू वहां की फांसी घर जो सावरकर जी के कमरे के सम्मुख था तथा वहां के सभी स्थानों को देखा है। हम चाहेंगे कि सभी देशभक्तों को कालापानी की जेल को देश का प्रमुखतम तीर्थ स्थान मानकर वहां जाना चाहिए और भारतमाता के उन वीर सपूतों को अपनी श्रद्धांजलि देनी चाहिए जहां सावरकर जी सहित अनेक देशभक्तों ने घोर यातनाएँ सहन की थी। इतना और बता दें कि वहां सायं के समय एक लाइट एण्ड साऊण्ड शो होता है जिसमें वर्णित उस काल की स्थितियों के अनुभव व उन्हें देखकर रोटों खड़े हो जाते हैं। प्रत्येक देशभक्त के लिए यह दर्शनीय है। इस लाईट एण्ड साऊंड शो को यूट्यूब से भी डाउन लोड कर देखा जा सकता है।

देश की आजादी के बाद स्थापित केन्द्रीय सरकार की अदूरदर्शिता पूर्ण नीतियों का परिणाम सन् १९४८ में पाकिस्तान पर कश्मीर पर आक्रमण के बाद सन् १९६२ में चीन के आक्रमण के रुप में सामने आये। चीन ने हमारी ४०० वर्गमील भूमि पर कब्जा कर लिया। सावरकर जी को इससे गहरा धक्का लगा और उन्होने खून के आंसू पीये। सन् १९६५ में पाकिस्तान भारत पर आक्रमण कर दिया परन्तु अब लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री थे और हमारी सेनायें भी पूरी तरह से तैयार थी। पंजाब में हमारी सेनायें लाहोर तक और कश्मीर में हाजीपीर दर्रे तक आगे बढ़ गई। सावरकर जी ने लालबहादुर शास्त्री जी को विजय की बधाई थी। परन्तु तभी ताशकन्द समझौता हुआ जिसमें वीर भारतीय सैनिकों का खून बहाकर प्राप्त किया गया समस्त भूभाग पाकिस्तान को लौटाना पड़ गया और लाल बहादुर शास्त्री भी हमसे बिछड़ गये। इसके पीछे हुए षड़यंत्र का आज तक पता नहीं चला। क्या कभी इस षड़यंत्र की जांच होगी?

वीर सावरकर जी इस ताशकन्द समझौते से अत्यधिक व्यथित हुए। **२६ फरवरी १९६६ को भारत माता का यह अन्यतम पुत्र अपने देह को छोड़ कर स्वर्ग सिधार गया।** सावरकर जी का जीवन भारतवासियों के लिए प्रकाश स्तम्भ है। यदि देश उनके बताये हुए मार्ग पर चलेगा तो इससे देश बलवान व अपमानित होने से बचा रहेगा। सावरकर जी पर हिन्दी में पूरी अवधि का चलचित्र भी बना है जिसे प्रत्येक देशभक्त देशवासी को देखना चाहिए। यह पहला चलचित्र है जिसे सावरकर जी के भक्तों से चन्दा एकत्र करके बनाया गया है। वीर सावरकर जी के १३२ वें जन्म दिवस पर उन्हें हमारी कृतज्ञतापूर्ण श्रद्धांजलि।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

पाथेय

खरा धन

- आचार्य कर्मवीर

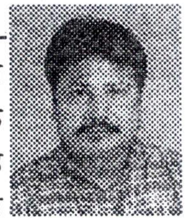

धन की खोट आदमी को तब मालूम होती है, जब वह खरा बनने लगता है। खरा बनने का अर्थ यह नहीं है कि इंसान घर बार छोड़ दे, जंगल में चला जाय और भगवान के चरणों में लौ लगाकर बैठे रहे। बहुत से लोग ऐसा भी करते हैं, पर यह रास्ता सबका रास्ता नहीं है। ज्यादातर लोग तो दुनियां में रहते हैं और उनका वास्ता अपने घर के लोगों से ही नहीं दूसरों के साथ भी पड़ता है। खरा आदमी वह है जो अपनी बुराईयों को दूर करता है और नैतिकता का जीवन बिताते हुए अपने समाज और देश का काम आता है। ऐसा व्यक्ति सभी से प्रेम करता है और सबके सुख-दुख में काम आता है। महर्षि दयानन्द जहां भी दुःख होता था वहां तत्काल पहुंच जाया करते थे। हजरत मोहम्मद भी परदुखकातर थे उनसे भी दूसरों के दुख नहीं देखे जाते थे। भगवान बुद्ध तो स्वयं सेवा के अवतार थे, जनमानस को दुख मुक्ति से निजात दिलाने निरन्तर प्रयत्नशील रहा करते थे। महात्मा गांधी के जीवन में भी यह भावना कूट-कूट कर भरी थी, वे परचुरे शास्त्री के घाव नहीं थे, गलित कुष्ठ के घाव थे, उनमें से मवाद निकलता था, लेकिन गांधी जी बड़े प्रेम से शास्त्री जी की सेवा करते थे। ऐसी मिसालें एक दो नहीं सैकड़ों हजारों में यत्र तत्र बिखरी पड़ी हैं, जो मानव जाति की सेवा करता है उससे बड़ा धनी कोई नहीं हो सकता।

अबू बिन अदम की कहानी आपने सुनी होगी। एक दिन रात में वह अपने कमरे में सो रहा था। अचानक उसकी आँख खुली देखा कि सामने एक देवदूत बैठा कुछ लिख रहा है। अदम ने पूछा- आप क्या लिख रहे हैं ? उसने जवाब दिया - मैं उन लोगों के नाम लिख रहा हूँ जो भगवान को प्यारे हैं ? अदम थोड़ी देर चुप रहा। फिर बोला - भैया मेरा नाम उन लोगों में लिख लेना, जो इंसान की सेवा करते हैं। देवदूत चला गया और अगले दिन जब वह लौटा तो उसके हाथ में उन व्यक्तियोंकी सूची थी जिन्हें भगवान का आशीर्वाद मिला था। अबू बिन अदम का नाम सूची में सबसे ऊपर था। साफ है कि जो दूसरों की सेवा करता है वह भगवान की ही सेवा करता है। सेवा करने का अपना आनन्द होता है। एक बार सेवा करने की आदत पड़ जाती है तो फिर छूटती नहीं, जो बिना किसी स्वार्थ के दूसरों की सेवा करता है, उसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। सूरज बिना बदले की इच्छा रखे सबको धूप और रोशनी देता है, चांद ठंडक पहुंचाता है, धरती अन्न देती है, नदियां जल बहाती है, हवा प्राण देती है, गाएँ दूध देती है, पेड़ फल देते हैं, इनकी बराबरी भला कौन करें ?

श्री विनोबा भावे का भूदान यज्ञ देखिए कितनी भारी सफलता इस महामानव ने हासिल कर ली जिसकी कल्पना करना भी नामुमकिन है। आखिर क्या रखा था विनोबा के पास ? न धन, न कोई बाहरी सत्ता सिर्फ पर उपकार के बल पर सेवा की ताकत पर उन्होंने करोड़ो लोगों के दिल में अपनी जगह बना ली थी। सम्पूर्ण देश में उन्हें चालीस लाख एकड़ से ऊपर जमीन मिली। सैकड़ों ग्राम ग्राम दान में मिले और हजारों जीवनदानियों की फौज उनके पास इकट्ठी हो गयी। यह सब कैसे सम्भव हुआ। इसका एक ही उत्तर है - सेवा के बल पर। जब उन्होंने भूदान यज्ञ की शुरुआत की थी, लोगों ने ऐसी ऐसी बातें कही थी कि कोई दूसरा व्यक्ति होता तो अपनी योजना को ही बदल देता किन्तु विनोबा जी ने किसी भी बात की परवाह नहीं की। महाराज भर्तृहरि अपने नीति शास्त्र में ऐसे ही धन के धनी का वर्णन करते हुए कहते हैं- नीति के जानकार निन्दा करें, या तारीफ के पूल बांधे धन सम्पत्ति मिले, चाहे कंगाली में जीना पड़े, चाहे आज मौत को गले लगाना पड़े या जुग जुग जीना पड़े महापुरुष न्याय एवं सत्य की राह को एक बार पकड़ लेने के बाद कैसी भी परिस्थिति निर्मित हो जाय फिर पीछे पग धरना उनकी फितरत में कभी नहीं रहती। इतिहास

साक्षी है विनोबा जी अपने उद्देश्य प्राप्ति के प्रयत्नों में तनिक भी विचलित हुए बगैर आगे बढ़ते रहे। उनका भगवान पर इतना दृढ़ विश्वास था कि किसी चीज की परवाह नहीं थी, उनके दिल में कोई स्वार्थ नहीं था, ऐसे व्यक्ति को अपने काम में सफलता मिलती ही थी, वे हजारों मील पैदल चले। जाड़ों में चले, गर्मियों में चले, बरसात में चले, धूप में चले, पहाड़ पर्वत नदीं नाले न जाने कैसे कैसे विषम मार्गों को पार करते गए। लोगों ने कहा - बाबा चलते-चलते बहुत दिन हो गए। थोड़ा आराम कर लो, जानते हैं विनोबा ने क्या जवाब दिया ? उन्होने कहा सूरज कभी रुकता नहीं, चांद कभी टिकता नहीं, नदीं कभी थमती नहीं, मेरी भी यात्रा अखण्ड गति से चलेगी। सेवा के आनन्द में लीन विनोबा चलते रहे, चलते रहे। देश का कोई भी कोना उन्होने नहीं छोड़ा, प्रेम की निर्मल धारा उन्होने घर घर पहुंचा दी।

एक दिन उनकी टोली में कई लोग बैठे थे, शाम का वक्त था, उस दिन विनोबा को बहुत सारी जमीन मिली थी। जब उन्हें दिन भर का हिसाब बताया गया तो वह मुस्कराने लगे। बोले आज इतनी जमीन हाथ में आई है, लेकिन देखों कहीं हाथ में मिट्टी चिपकी तो नहीं। वहां उपस्थित अनेक लोग हँस पड़े, पर विनोबा ने बड़ी मर्म की बात कही थी, जिसके हाथों में लाखों एकड़ भूमि आई हो, उसके हाथ में एक कण भी चिपका न रहे, इससे बड़ा त्याग और क्या हो सकता है।

अनेक महापुरुषों का जीवन पढ़ जाइए आपको एक बात जरुर मिलेगी उनके अन्दर स्थित जनकल्याण की भावना और यही वह भावना होती है जो किसी भी विपरीत परिस्थिति का सामना करने की हिम्मत दे जाती है। वरना एक अकेला दयानन्द और विरोधी जग सारा कैसी कैसी बाधाएँ उस महान पुरुष के जीवन में आई, कितने षड़यंत्र रचे गए, हत्या की कितनी योजनाएँ निर्मित हुई। गुंडों के द्वारा गंगा जी में डूबाने के प्रयास भी हुए। जहर खुरानी की घटना तो दयानन्द के जीवन में आम बात बनकर रह गई थी। खाने पीने की वस्तुओं में एक दो बार नहीं १७ बार जहर दिया अपने ही लोगों ने, क्योंकि उनके कठोर सत्य के प्रचार ने उन्हें लोगों का दुश्मन बना दिया था, अपमानित करने के ऐसे ऐसे तरीके उनपर आजमाए गए कि किसी भी महापुरुष के बारे में सुनने पढ़ने को नहीं मिलती। उनके व्याख्यान के बीच विरोधी किराये के आदमी भेजकर व्यवधान डालने के प्रयास करते - कोई कहता ऐ बाबा तेरा ज्ञान विज्ञान रहने दे, पहले उस दिन जो मेरी भट्ठी में शराब पीकर गया था उसका बकाया कब देगा, पीछे से दूसरा व्यक्ति बोलता था, महात्मा तूने जो उस दिन मांस लेकर गया उसका पैसा कब देगा ? महर्षि तनिक भी विचलित नहीं हुए बिना उन्हें कहते यह कथा समाप्त होने पर मैं तुम्हारा हिसाब करुंगा, शान्त रहो। कल्पना कीजिए बदतमीजी की यह हदहैया नहीं है। एक बार तो विरोधियों ने जिस नगर में स्वामी जी महाराज की कथा हो रही थी उसी नगर में एक आदमी का मुँह काला करके गधे पर बिठा दिया और दयानन्द की जय के नारे लगाते हुए जुलूस निकाल डाला यह बात जैसे ही स्वामी जी के भक्तों को पता चली तुरन्त आकर स्वामी जी को बताया महाराज जी इस प्रकार आपका अपमान किया जा रहा है।

स्वामी जी कहते हैं तुम चिन्ता मत करो। वे लोग जिसका जुलूस निकाले हैं वह तो नकली दयानन्द है असली तो तुम्हारे सामने बैठा है। जिसका कि कोई बाल भी बांका नहीं हुआ। नकली दयानन्दों का तो ऐसा ही हाल किया जाना चाहिए। यह है धारा के विपरीत सिर्फ जन कल्याण के प्रयास में लगे महायोद्धा के महाविचार।

एक बार सेवक बलदेव ने रात्रिकालीन भोजन के पश्चात् महाराज जी के लिए बिस्तर लगा दिया और अपने कमरे में सोने चला गया, सुबह जब महाराज का बिस्तर समेटने के लिए आया तो क्या देखता है, महाराज जी बरामदे में बड़ी बैचेनी से टहल रहे हैं, उसने बिस्तर को देखते ही तुरन्त समझ लिया आज तो बिस्तर का उपयोग बिल्कुल नहीं हुआ सोने का कोई भी चिन्ह कोई भी सलवट कहीं दिख नहीं रही तो सेवक ने पूछ ही लिया महाराज जी आपने बिल्कुल भी रात में नींद नहीं ली। महाराज जी कहते हैं, देश की दुरवस्था ने मेरी नींद चैन सब छिन रखा है- विधवाओं की करुण पुकार अन्धविश्वास एवं कुरीतियों में

जकड़ी मानवता प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ धरोहर वैदिक शिक्षा के अभाव में भटकता भारतीय समाज आचरण की श्रेष्ठता के बगैर सिर्फ गंगादिक नदियों में स्नान मात्र से पाप धूल जाने की अंधी सोच, बाल विवाह, गौहत्या आदि तमाम ऐसी बुराईयां पनप गई थी, जिसकी खातमा के बिना खुशहाली की कल्पना बेमानी सी लगती थी, इन समस्याओं के निवारण के लिए उन्होने पूरे देश का भ्रमण किया। सबसे बढ़कर विदेशी साम्राज्य के आतंक से देश को मुक्त कराने का भी उन्होने संकल्प कर रखा था, इसके लिए मुंबई में आर्यसमाज बनाई सत्यासत्य के निर्णय के लिए सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रंथ रचा, हजारों लाखों लोग जुड़ते गए, परतन्त्रता की बेड़ी टूटी, स्वतन्त्रता की परिस्थिति निर्मित हुई। इस प्रकार परोपकार के द्वारा उन्होने एक कीर्तिमान स्थापित किया।

अमेरिका की धरती पर जब थामस अल्वा एडीसन न्यूजर्सी शहर के मोनेले पार्क में पहली बार बल्ब का आविष्कार कर जनता को प्रदर्शन कर रहे थे तो लोगों ने कहा- इस प्रकार बल्ब जल ही नहीं सकता, किन्तु एडीसन विचलित हुए बिना अपने प्रयासों में लगे रहे और बहुत जल्दी प्रतीक्षा की घड़ी खत्म हुई और उन्होने बल्ब जलाकर दिखा दिया तो पीछे से लोगों ने फिर से चिल्लाना शुरु किया कि बल्ब जल तो गया लेकिन यह बिल्कुल नहीं बूझेगा किन्तु इतिहास गवाह है बल्ब जला भी बूझा भी, और अंधेरे का स्थाई इलाज बल्ब के रुप में उस महामानव ने कर दिखाया, जिसे लोगों ने परेशान करने की कोई भी कसर नहीं छोड़ी। अन्ततः प्रयास विजयी हुआ। इस प्रकार समाज में कुछ अच्छा करने के प्रयासों को हमेशा तमाम संघर्षों व समस्याओं का सामना करना पड़ता है किन्तु धैर्यपूर्वक जनकल्याण में लगे महापुरुष एक दिन सफलता के शिखर पर पहुंचकर देश व दुनियां के लिए सुख शान्ति का मार्ग प्रशस्त कर देते हैं यह प्रयास, यह पर उपकार प्रवृत्ति ही मानव का सबसे खरा धन है बाकि सब धन खोटा है जिसके लिए जनसाधारण दिन रात एक किए हुए हैं। अतः प्रयास खरा धन के लिए इसी में सुख है।

पता : नन्दिनी भिलाई (छ.ग.)

रचयिता : **मोहनलाल चड्ढा**

कविता :-

"भारत"

लोभ और स्वार्थ ने बदली भारत की तकदीर है
धुंधली अब तो लगी है लगने भारत की तस्वीर है
संस्कृति निर्वस्त्र हो रही है देखो आज चौराहों में
निर्लज्जता के बीज बो रहे, शहर शहर और गांव में,
मर्यादा के नहीं है बंधन आज किसी के पांव में
दानवों की इन टोली में न दिखता कोई कबीर है
लोभ और स्वार्थ ..... ॥१॥

गैरों के हाथों में बिक यह सभ्यता तो फूंक रहे
इस देश की हर आभा को यह आग में झोंक रहे
कहां जा रही देश की पीढ़ी, नहीं इसे कोई रोक रहे
राम कृष्ण के अस्तित्व पर भी, खिंचने लगी लकीर है
लोभ और स्वार्थ ..... ॥२॥

इस देश के प्राणी देखो जी रहे सब ऐसे
एक ही घर में सब रहते है, मिलते हैं दुश्मन जैसे
भौतिकता ने इस मानव के, हाल किये है कैसे
माया के दल दल में धंसता, नेता और फकीर है
लोभ और स्वार्थ ..... ॥३॥

नये रंग में रंगी यह पीढ़ी, इतिहास भी अपना जानेगा
अपने देश के महापुरुषों को, अपना तक यह माने न
क्या होगा भविष्य देश का, कर्णधार यह जाने न
आओ बदले सोच उनकी, जो बच्चों के पीर हैं
लोभ और स्वार्थ ..... ॥४॥

जो चाहते हो इस दुनियां में, श्रीकृष्ण का नाम रहे
इस विश्व में मर्यादा राम की, सदा ही पहचान रहे
सारे विश्व में भारत माँ की, ऊँची सदा ही शान रहे
"मोहन" तोड़ो पड़ी पांव में, हीनता की जंजीर है
लोभ और स्वार्थ ..... ॥५॥

पता : एमआईजी-II, १७३, हुडको भिलाई (छ.ग.)

उपादेयात्मक शिक्षा के साथ शिष्टाचार अनिवार्य

- अंजलि आर्या, कन्या गुरुकुल पंचगांव

शिक्षा का अर्थ जिज्ञासा भी है :

शिक्ष-विद्योपादाने धातु से **भाव अर्थ में अ** प्रत्यय करने पर शिक्षा शब्द सिद्ध होता है। संस्कृत में शिक्षा शब्द का पर्यायवाची विद्या ही है। मनुष्य जीवन में शिक्षा की महती भूमिका है। जन्म से मनुष्य आहार-व्यवहार से परिचित नहीं होता, शिक्षा ही उसे जागृत करती है। शिक्षा के बिना मनुष्य शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति नहीं कर सकता। व्यवहार की शुद्धता से व्यक्ति प्रभावशाली व विकासशील व्यक्तित्व वाला होता है। शिक्षा शब्द के व्यापक अर्थानुसार शिक्षा आजीवन चलायमान एक प्रक्रिया है जिसे दूसरे शब्दों में कहा जाता है कि व्यक्ति मृत्युपर्यन्त कुछ न कुछ समझता सीखता और अनुभव करता रहता है। यह सब शिक्षा के अन्तर्गत ही आता है। शिक्षा की प्रथम गुरु माता होती है **माता निर्माता भवति** माता ही बालक का निर्माण करने वाली होती है। तत् पश्चात् बालक विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करता है।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य के जन्म से लेकर उसके पूर्णविकास तक अपना योगदान देती है। विद ज्ञाने, विद् सत्तायाम, विदलृ लाभे, विद विचारणे इन चार धातुओं से विद्या शब्द सिद्ध होता है। जिनके आधार पर विद्या शब्द का बहुत व्यापक अर्थ है। मनुष्य के विकास का मूल शिक्षा होती है। विद्या, कला, कौशल, शक्ति की वृद्धि करती है। शिक्षा मनुष्य जीवन का सुसंस्कृत एवं महत्त्वपूर्ण अङ्ग होती है। शिक्षा का क्षेत्र केवल विद्यालय ही नहीं है अपितु उसका क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत है। शिक्षा के विपरीत यदि कोई कार्य करता है तो वह केवल राक्षस कहलाता है- **साक्षराः विपरीता चेत् राक्षसाः अपि केवलम्**। अब आ रही शिष्टाचार की बात- राग-द्वेष रहित, परोपकारी, धर्मात्मा तथा श्रेष्ठ विद्वद्जनों को शिष्ट कहते हैं, जो पुरुष मान-मर्यादाओं में चलते हैं उन्हें शिष्टाचारी कहते हैं। शिष्टाचार की प्रेरणा लेते रहना समझदार मनुष्य का काम है।

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्॥

शिष्टजनों का सम्मान करने वालों की आयु, यश और बल बढ़ता है। बालक को ऐसी शिक्षा दें कि बड़ों से कैसे बोलना चाहिए। निष्प्रयोजन बड़ों का नाम नहीं लेना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर सम्मान द्योतक शब्दों से बोलें। जिस विद्यार्थी में शिष्ट बनने का गुण होता है वह बड़ों से सदा आशीर्वाद पाता है। किसी सभा-उत्सव अथवा राजनीति आदि में बिना बुलाये नहीं जाना चाहिए। यह अशिष्ट व मूर्खों का कार्य है। यथा महाभारत के उद्योग पर्व में लिखा है-

अनाहूतः प्रविशति अपृष्टो बहुभाषते।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः॥

अर्थात् मनुष्य ही आगे चलकर महापुरुष होता है। सभी से नम्रतापूर्वक मिले और वार्तालाप करें। दूसरों की निन्दा करने से अपना अहित होता है, सत्य को भी मीठे ढंग से कहना चाहिए। परीक्षा किए बिना किसी भी विषय में कुछ कहना-सुनना उचित नहीं होता। स्त्री जाति का भी मान रखना चाहिए। अपने से बड़ी आयु की हो तो माता के समान बराबर की हो तो बहन के समान और छोटी हो तो पुत्री के समान व्यवहार करना चाहिए। यह सब शिष्टाचार के अन्दर आता है। दूसरे की धन-सम्पत्ति देखकर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए, यह सब समझदार सज्जनों का काम नहीं है। शिष्टाचार के इन नियमों का सदा पालन करना युक्त है। बालक को बचपन से ही बीड़ी, सिगरेट, पान, चाय, अण्डा, दुर्व्यसन, कुसंगति, सिनेमा आदि से दूर रखें। बालक शिष्ट बन गया तो उसकी जीवन सुधर जाता है। अतः शिक्षा के साथ-साथ शिष्टाचार परम आवश्यक है। सज्जनों से निवेदन है कि अपनी भावी पीढ़ी को शिक्षा के साथ शिष्टाचार की शिक्षा दें।

सबसे प्रथम कर्त्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में।
शिक्षा बिना ही पड़ रहे आज हम सब क्लेश में॥
शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है।
शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है॥

॥ इत्योम् ॥

आधी दुनियां

जिस घर में बेटी नहीं, वह घर रेगिस्तान

- मुनेश त्यागी

भारत के महापंजीयक व जनगणना आयुक्त पी. चन्द्रामौली द्वारा जारी किए गए जनगणना के आंकड़े दर्शाती है कि देश की आबादी १२१ करोड़ हो गई है। देश में पुरुषों की संख्या ६२.३७ करोड़ तो महिलाओं की संख्या ५८.६४ करोड़ हो गयी है। जनसंख्या वृद्धि दर २००१ के मुकाबले ३.८० फीसदी की कमी आई है। आंकड़ों के मुताबिक देश में रोजाना ५० हजार लोगों की वृद्धि हो रही है। वहीं पर बेहद शर्मनाक और चिंताजनक हकीकत यह भी है कि छह वर्ष तक के बच्चों के लिंगानुपात में कमी आयी है जो प्रति १००० लड़कों पर ९७२ से घटकर ९१४ हो गया है। यानी कि हमारे देश में लड़कियों की, बेटियों की संख्या लगातार कम होती जा रही है। देश के दस प्रदेशों में यह स्थिति काफी भयावह है, वहां १००० से ९०० से भी कम लड़कियां है, यहां क्रमवार ब्यौरा देखना समीचीन होगा- हरियाणा में ८३०, पंजाब में ८४६, जम्मू-कश्मीर में ८५९, दिल्ली में ८६६, गुजरात में ८८६, उत्तराखंड में ८८६ व उत्तर प्रदेश में ८२९ लड़कियां है। सबसे बदतर जिले हरियाणा के झज्जर ७७४ व महेन्द्रगढ़ ७७८ है।

इस वर्ष पूर्व २००१ में जब इस प्रकार के आंकड़े आए थे तब सड़क से लेकर सांसद तक हंगामा मच गया था। तब कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए पूर्व निदान तकनीक अधिनियम को सख्ती से लागू करने और इसे और सख्त बनाने व सारे चोर दरवाजों को बंद करने की कवायद करने और शोर मचाया गया था। कितना विस्मयकारी है कि एक तरफ तो कानून संविधान और महिला-पुरुष की समानता की बात हो रही है तो दूसरी ओर बालिका भ्रूण हत्या हो रही है। लड़कियों को पेट में ही जब्त किया जा रहा है। उन्हें लगातार और बेखौफ होकर बड़ी बेशर्मी और बेदर्दी से नायाब किया जा रहा है। हालात को देखकर डर लगने लगता है कि यदि इस औरत हत्या अभियान को समय रहते नहीं रोका गया तो वह समय आने वाला है कि लड़कों को लड़कियां नहीं मिलेगी। अनेक घरों का वंश खत्म हो जायेगा। कुल दीपक बुझ जाएंगे तब हमारे पास आंसुओं के सिवाय कुछ नहीं बचेगा। वर्ष २०११ की जनगणना ने यह साबित कर दिया है कि सरकार कानून द्वारा किए गए तथाकथित सारे उपाय निराधार और बेअसर हो गए हैं। कन्या भ्रूण हत्या नहीं रूकी अतः शिशु लिंगानुपात और बिगड़ गया। पिछले दस वर्षों में जहां लड़कों की संख्या में ह्रास हुआ है। २००१ से अब तक लड़कों की संख्या बढ़कर ५१.८८ प्रतिशत से ५२.२४ हो गई है तो लड़कियों की संख्या घटकर ४९.११ प्रतिशत से ४७.७६ प्रतिशत रह गई है। यह चौकाने वाला तथ्य है कि आजादी के बाद के ६४ वर्षों में लड़कियों की संख्या में यह गिरावट सर्वाधिक है। इसके आर्थिक, सामाजिक और कानून की खामियाँ आदि कारण है। शादियों और दहेज का बढ़ता खर्च दोषियों को समय से कठोर सजा न मिलने के कारण

भ्रूण हत्यारों का आसानी से बच जाना और पुत्र बिना मुक्ति नहीं मिलती, वाली मानसिकता घटते लिंगानुपात के मुख्य कारण है। जनसंख्याविदों के आकंलन के मुताबिक एक हजार लड़कों पर कम से कम ९४०-९५० लड़कियां अवश्य होनी चाहिए। लिंगानुपात में केरल और पुंडुचेरी के आंकड़े उत्साहजनक है। केरल में यह अनुपात १००० पुरुषों पर १०८२ महिलाएँ है तो पुंडुचेरी में १०३८ महिलाएं है। पुंडुचेरी के माहे जिले में यह अनुपात ११७६ महिलाएं हैं तो उत्तराखंड के अलमौड़ा में ११४२ महिलाएँ है। दमन और लेह में यह संख्या ५३३ व ५८३ है जो लिंगानुपात में सबसे खराब तस्वीर पेश करते हैं। भारत की बढ़ती तरक्की के समक्ष ये आंकड़े उत्साहवर्धक नहीं कहे जा सकते। प्रश्न यह है कि लड़कियाँ पैदा नहीं हो रही है या पैदा ही नहीं होने दी जा रही है। अधिकांश घरों में लड़की पैदा होते ही रंजोगंम का माहौल कायम हो जाता है। पूरे घर-परिवार में शोक पसर जाता है। देश के अधिकांश हिस्सों में औरत-विरोधी मानसिकता गहरी जड़े जमाए हुए हैं। सामाजिक स्तर पर उनमें संकीर्णता और रूढ़िवादिता बनी हुई है। इस महिला विरोधी रुगण्ता और विकृति को बदलने के लिए उदार-जहनियत और बड़े सामाजिक आंदोलनों की जरुरत है। साथ ही कानून, सरकार समाज और मीडिया को भी असरदार तरीके से हस्तक्षेप करने की जरुरत है तभी भविष्य में होने वाले सामाजिक भयावह परिणामों से बचा जा सकता है। हम तो यही कहेंगे -

बच्चों से मानव वंश चले, बच्चे ही घर की शान,
पर जिस घर में बेटी नहीं, वह घर रेगिस्तान।

- प्रख्यात स्तंभकार, नई दिल्ली

पीयूष-प्रवाह

सत्संग का दुरुपयोग न करें

संसार में भगवत्प्राप्ति के जितने साधन है सब ध्यान के लिए ही हैं। ध्यान परमात्मा की प्राप्ति कराने वाला है। सबसे बढ़कर परमात्मा का ध्यान देना चाहिए। इसलिए सभी को ध्यान की ओर ध्यान देना चाहिए। ध्यान से पाप और विक्षेप का नाश होता और ध्यान से परम शांति की प्राप्ति प्रत्यक्ष होती है। ध्यान हर समय रहे, तो उसके कल्याण में शंका नहीं है। मनुष्य से और कोई साधन नहीं हो सके, केवल ध्यान ही करें, तो उसका भी कल्याण है। सत्संग का दुरुपयोग यह है कि हम लोग सत्संग तो करते ही हैं, ऐसा मानकर अपना साधन ढीला कर दें। अपना कल्याण तो इससे हो ही जाएगा। जैसे काशी में रहकर यह मान लें कि मेरी मुक्ति तो हो ही जायेगी, साधन ढीला कर दे और मान ले कि यहां पाप करने में क्या हर्ज है, मुक्ति तो हो ही जाएगी। कोई आदमी नाम का आश्रय लेकर पाप करता है कि भजन करके पाप का नाश कर लेंगे जो आदमी भजन के सहारे पाप करता है वह भजन को कलंक लगाता है उसका पाप भोगे बिना कभी भी नष्ट नहीं होता। जो आदमी सत्संग का सहारा लेकर मान बैठे कि कल.ाण तो हो ही जाएगा, भजन-ध्यान करो चाहे मत करो, वह भूल में है, यह सत्संग का दुरुपयोग है। अंतकाल में भगवान के नाम से पाप नष्ट हो जाएंगे, यह मानना ठीक है। साधक सत्संग करता ही रहे, कभी छोड़े ही नहीं। हम लोग राजी-खुसी चल रहे हैं, चलते-चलते ही मर सकते हैं, ऐसा समझकर सावधान रहना चाहिए। आज हमारी मृत्यु हो जाए, तो कौन रक्षा करने वाला है ? माता, पिता, धन, स्त्री, पुत्र - ये सब हमारे क्या का आ सकते हैं ? इसलिए परमात्मा की शरण हो जाओ। परमात्मा से प्रार्थना करो कि हे प्रभो! मेरा नित्य-निरंतर आपका ध्यान बना रहे। हम लोगों को ध्यान रखने की चेष्टा करनी चाहिए। निरंतर ध्यान रहा, तो अंतकाल में भी रहना संभव है। जिसके निरंतर ध्यान रहेगा, उसको स्वप्न में भी ध्यान रहेगा।

मरने वाले को मगर अब भी वतन की फिक्र है

ऐतिहासिक

- ऋषि कुमार आर्य

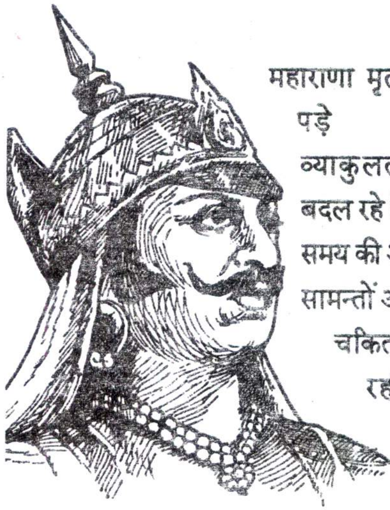

महाराणा मृत्यु-शय्या पर पड़े छटपटाकर व्याकुलता से करवट बदल रहे हैं। उनकी इस समय की अधीरता उनके सामन्तों और सैनिकों को चकित और दुःखी कर रही है । उनके आश्चर्य का कारण यह था कि महाराणा जीवन-भर मृत्यु से कभी भयभीत और आतङ्कित नहीं हुए, किन्तु आज जब मृत्यु सम्मुख है तो वे उसे देखकर व्याकुल और कातर हैं - सो क्यों ? अन्ततः एक साहसी सामन्त ने महाराणा से हाथ जोड़कर पूछ ही लिया - महाराणा ! हम लोगों ने जीवन-भर आपको भयङ्कर-से-भयङ्कर सङ्कट के समय भी कभी व्याकुल और परेशान नहीं देखा। आप मृत्यु को सामने देखकर सदा मुस्कराए हैं, पर आज जब वस्तुतः जीवन के अवसान का समय आ गया प्रतीत होता है, तब आप बहुत व्याकुल प्रतीत होते हैं। यदि कोई ऐसी मानसिक चिन्ता हो जो आपको अशान्त कर रही हो, तो आप हमें आदेश दीजिए । हम आपके सेवक सिर-धड़ की बाजी लगाकर भी आपकी उस इच्छा को पूरा करेंगे। सामन्त की इस बात को सुनकर महाराणा ने उत्तर दिया-3तुम ठीक कहते हो। एक साधारण-सी घटना की स्मृति ने मुझे अशान्त कर रक्खा है और वह मुझे शान्ति से इस संसार से विदा नहीं होने देती।

बात इस प्रकार है - एक दिन मैं इसी झोपड़ी में बैठा था। सामने की झोपड़ी से मेरा पुत्र अमरसिंह निकला। अब ये झोपड़ियाँ हैं, कोई महल नहीं। इनके द्वार भी ऐसे हैं, जिनमें से झुककर आना-जाना पड़ता है। निकलते हुए अमरसिंह की पगड़ी एक बाँस में उलझकर गिर गई। इस साधारण-सी बात पर वह आगबबूला हो गया और अपनी तलवार से रस्सी के बन्धन काटकर बाँस खींचकर पृथिवी पर फेंक दिया। इस घटना का मेरे ऊपर यह प्रभाव है कि मेरी मृत्यु के बाद अमरसिंह इन झोंपड़ियों में न रह सकेगा, वह महलों में रहेगा। फिर महलों की तथा घास-पत्तों और कुशा के बिछौनों की क्या सङ्गति ? शानदार पलङ्ग आएंगे और उन पर मखमली गद्दे बिछेंगे। इसके साथ ही खाने की पत्तलों की जगह चमचमाते सोने-चाँदी के थाल होंगे। जब ये सुख-सुविधा की वस्तुओं के अभ्यस्त हो जावेंगे, फिर मुगलों के साथ सीमित शक्ति रहते हुए सङ्घर्ष करने में जो तप अपेक्षित है, उससे चित्त कतराएगा और परिणाम यह होगा कि अन्य राजपूतों के समान बादशाह की आधीनता स्वीकार कर आराम से जीवन बिताने का निर्णय किया जाएगा। इस प्रकार मेरी सारी तपस्या व्यर्थ चली जाएगी। बस, यही बात है कि जो मुझे चैन से नहीं मरने देती।4

सब साथियों ने राणा की चिन्ता सुनकर म्यान से तलवारें खींच लीं और प्रतिज्ञा की कि राणा ! जब तक हम जीवित हैं, आपके पुत्र को बादशाह के आगे नहीं झुकने देंगे।

महाराणा साथियों और सामन्तों की इस प्रतिज्ञा से आश्वस्त हो गए तथा प्रसन्नतापूर्वक थोड़ी ही देर में अपने प्राणों का परित्याग कर दिया।

उर्दू शायर जैमिनि (सोनीपती) ने महाराणा की मृत्यु का एक अच्छा शब्द-चित्र उपस्थित किया है -

कितना इबरतखेज है मंजर जमाने के लिए।
मौत मीठी नींद आई हैं सुलाने के लिए ।।
जमा हैं अहबाब और सबको कफन की फिक्र है।
मरने वाले को मगर अब भी वतन की फिक्र है ।।

पता : आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)

आरोग्य जगत

होमियोपैथी से पथरी का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

किडनी, यूरेटर या ब्लाडर में पथरी का निर्माण होना एक भयंकर पीड़ादायक रोग है। मूत्र में पाये जाने वाले रासायनिक पदार्थों से मूत्र अंगों में पथरी बनती है। पथरी दो प्रकार की होती है। १. मूत्र पथरी (किडनी स्टोन) २. पित्त पथरी (गाल स्टोन)

१. गुर्दे की पथरी :- अंग्रेजी में इसे किडनी स्टोन कहते हैं। मूत्र तंत्र की एक ऐसी स्थिति है जिसमें किडनी के अन्दर छोटे-छोटे पत्थर जैसे कठोर वस्तुओं का निर्माण होता है। बच्चों और वृद्धों में मूत्राशय की पथरी ज्यादा बनती है।

लक्षण : पीठ के निचले हिस्से अथवा पेट के निचले भाग में अचानक तेज दर्द, जो पेट व जांघ के संधि क्षेत्र तक जाता है। दर्द फैल सकता है या बाजु, गुप्तांगों तक बढ़ सकता है, यह दर्द कुछ देर तक बना रहता है। दर्द के साथ जी मचलने तथा उल्टी होने की शिकायत भी हो सकती है। यदि मूत्र संबंधी प्रणाली के किसी भी भाग में संक्रमण है, तो उसके लक्षणों में बुखार, कंपकपी, पसीना आना, पेशाब के साथ-साथ दर्द होना आदि, बार-बार और एकदम से पेशाब आना, रुक-रुक कर पेशाब आना, मूत्र में रक्त भी आ सकता है, अण्डकोष में दर्द, पेशाब का रंग असामान्य होना, मूत्रवाहक नली की पथरी में दर्द पीठ के निचले हिस्से से उठकर जांघों की ओर जाता है।

प्रमुख औषधियाँ - लाइको पोडियम, डायस्कोरिया, कैल्केरिया कार्ब, बरबेरिस, ओसेमिम कैनम, सार्सापरिला, सोलिडैंगो, टेरीबिन्थना, कैन्थरिसं आदि।

पित्त पथरी (गाल स्टोन) :- पित्त कोष में पित्त रस जम जाने से पित्त पथरी बनती है। जब तक यह पित्त कोष में पड़ी रहती है तब तक दर्द नहीं करती। जब वहां से हिलकर पित्त नली में आ फंसती है तब दर्द हो जाता है। पित्ताशय दाहिनी तरफ होने के कारण दर्द वाहिनी कोष से उठकर चारों तरफ फैल जाता है। दर्द भयंकर पीड़ायुक्त होता है। पथरी बनने के कारकों का अभी तक पता नहीं चला है, लेकिन माना जाता है कि यह मोटापे, डायबिटीज, आनुवांशिक तथा रक्त संबंधी बीमारियों की वजह से हो सकती है। गाल स्टोन एक बहुत ही आम समस्या है। महिलाों में अधिक पायी जाती है।

पित्त पथरिया :- एक से लेकर सैकड़ों की संख्या में हो सकते हैं। छोटी या बड़ी साइज में पायी जाती है। पित्त की थैली में बार-बार सूजन आने के कारण बनती है।

लक्षण :- पित्ताशय की पथरी को साइलेंट स्टोन कहते हैं। पथरी का आकार बढ़ जाने पर पेट के ऊपरी दाहिने भाग में अत्यधिक दर्द होता है, जिसके बाद प्रायः मिचली और उल्टी होती है, गैस का बनना, पेट का फूलना, डकार आना, अपच, सह प्रक्रिया घंटों बनी रहती है, रोगी बैचेन, मूर्छित सा हो जाता है आदि लक्षण होते हैं।

प्रमुख औषधियाँ - कैलकेरिया कार्ब., बरबेरिस बलगेरिस, कालैस्टीन, चायना, कार्बोवेज, हाइड्रेस्टिस, कल्केफ्लोर, आर्सेनिक आदि।

उपचार - पथरी के कई रोगी मेरे उपचार से ठीक हो गये हैं। कई रोगियों का उपचार चल रहा है। लगभग तीस (३०) वर्षों तक होमियोपैथी पद्धति से उपचार करने के दौरान मुझे आम आदमी के रोगों और परेशानियों का व्यापक अनुभव हुआ। रोगी को काफी धन खर्च करने के बाद भी अन्य चिकित्सा प्रणालियों से संतोषजनक लाभ नहीं मिल पा रहा था इससे उन्हें अत्यधिक निराशा होती थी। और मेरे भी चिन्ता का कारण बना। कई रोगियों को जिन्हें असाध्य घोषित किया जा चुका था जीवन और मरण से जूझ रहे थे। महात्मा हैनिमेन और उनकी होमियो चिकित्सा प्रणाली की बदौलत कई असाध्य रोगियों को मेरे उपचार से संतुष्टि और सफलता प्राप्त हुई है। कई रोगियों को नया जीवन मिला।

परहेज - पथ्य :- करेला बिना बीच का, नारियल पानी, केला, गाजर का सेवन कर पथरी से बचा जा सकता है। इसके अलावा प्रतिदिन तीन से चार लीटर पानी पीना चाहिए।

अपथ्य :- टमाटर, बैगन, आंवला, चीकू, काजू, खीरा, मूंगफली, मेथी, चाय, बथुआ, पालक, फूलगोभी, कद्दू अधिक प्रोटीनयुक्त आहार, मसाले वाली चीजें, चाकलेट, मछली और मांसाहार से बचना चाहिए।

महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) का ९४वाँ का जन्मदिवस समारोह सम्पन्न

दिल्ली। महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, कर्मठ नेता, समाजसेवी, प्रसिद्ध उद्योगपति महाशय धर्मपाल जी का दिनांक २६ मार्च २०१७ को दोप. ३.३० बजे से आर्य आडिटोरियम चन्द्र आर्य विद्या मंदिर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली निकट इस्कान मंदिर में भव्य रुप से जन्मोत्सव आयोजित किया गया, जिसमें सहस्त्राधिक लोगों को महाशय जी को वैदिक परम्परा जीवेम शरदः शतम्-भूयश्च शरदः शतात् उनके दीर्घ स्वस्थ जीवन की कामना व्यक्त की गई। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, उपप्रधान श्री दयाराम वर्मा, मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा एवं उपमंत्री श्री चतुर्भुज कुमार आर्य जी पधारे थे।

- दिल्ली से लौटकर सभा मंत्री दीनानाथ वर्मा

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध में नवसम्वसर महोत्सव सम्पन्न

रायपुर। महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में स्वातंत्र्य क्रांतिवीर विनायक दामोदर सावरकर द्वारा स्थापित अखिल भारतीय हिन्दू महासभा एवं छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में विश्व शांति महायज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अंशुदेव जी महाराज सभा प्रधान रहे। नवसम्वतसर प्रवेश उत्सव में मुख्य वक्ता गणमान्य निम्नानुसार रहे - श्री प्रकाशनारायण शुक्ल प्रांताध्यक्ष अखिल भारत हिन्दू महासभा छ.ग., आचार्य अंशुदेव आर्य प्रांताध्यक्ष छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्य संत कांशीनाथ चतुर्वेदी संस्कृत वेद विज्ञान प्रचारक, श्री विश्वनाथ सिंह जी पूर्व क्षेत्र संगठन मंत्री विश्व हिन्दू परिषद, श्री राजकमल सिंघानिया जी चन्द्रराज एजेन्सी टाटीबन्ध, श्री अरुण सरोज जिलाध्यक्ष हिन्दू महासभा, श्री अरुण अग्रवाल कोषाध्यक्ष हिन्दू महासभा, श्री रविप्रसाद सिंह जिलाध्यक्ष युवा हिन्दू महासभा, श्री घनश्याम चौधरी प्रांत संयोजक बजरंग दल, श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री सभा, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, श्री केवलकृष्ण विज, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, श्री सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव। इस कार्यक्रम अच्छी उपस्थिति थी, सभा द्वारा सभी सम्मान्य लोगों को सम्मान किया गया, हिन्दू नववर्ष डायरी व कलेण्डर भेंट कर किया गया। कार्यक्रम भव्य रुप से सम्पन्न हुआ।

- कार्यक्रम से लौटकर सभा मंत्री दीनानाथ वर्मा

डी.ए.वी. नन्दिनी में मना नवसंवतसरोत्सव

नन्दिनी। भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के पावन अवसर पर प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक २९ मार्च २०१७ को डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी माइंस में स्थित विशाल हंसराज सभा भवन में नवसृष्टि संवत् आर्यसमाज स्थापना दिवस विद्यालय के सभागार में बड़े धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस शुभ बेला में चारों वेदों से चुने गए विशेष मंत्रों द्वारा वृहद् यज्ञ का सर्वप्रथम आयोजन किया गया, जिसमें यजमान दम्पति की महत्वपूर्ण भूमिका प्राचार्य महोदय ने सपत्नीक निर्वाह कर यज्ञ को सफल बनाया। विद्यालय के प्राचार्य श्री राजशेखर जी ने आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में सभी को बधाईयाँ देते हुए महर्षि दयानन्द जी के अधूरे कार्य को पूरा करने तथा उनके पद चिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित किया तथा विद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के लिए आर्य युवा समाज का भी गठन किया। सभी छात्र-छात्राओं से स्कूल स्तर पर छात्र-छात्राओं के बीच कुछ वैदिक परम्पराओं एवं गतिविधियों के क्रियान्वयन हेतु वरिष्ठ छात्र-छात्राओं पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। विद्यालय के वरिष्ठ संस्कृत शिक्षक श्री कर्मवीर शास्त्री जी ने ब्रह्मत्व पद को ग्रहण कर वृहद् यज्ञ का अनुष्ठान कराया। इस समारोह में विद्यालय के छात्रों के साथ बड़ी संख्या में शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भी भाग लिया तथा प्रज्वलित यज्ञाग्नि में अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हुए समाज की खुशहाली एवं सुखशांति की कामना की यज्ञ के पश्चात् विद्यालय की शिक्षिकाओं ने तथा विद्यार्थियों ने अपने-अपने भजनों की प्रस्तुति दी। तथा वातावरण को भक्तिमय और आनन्दमय बनाया। अंत में शांति पाठ के बाद प्रसाद वितरण का कार्यक्रम हुआ।

संवाददाता : प्राचार्य, डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी भिलाई

आर्यसमाज पंगसुवा (जशपुर) में वेद यज्ञ शाला भवन निर्माण कार्य का शुभारम्भ

पंगसुवा (जशपुर)। दिनांक ४ मार्च २०१७ को आर्यसमाज पंगसुवा, वि.खं. पत्थलगांव, जिला जशपुर (छ.ग.) में वेद यज्ञशाला भवन निर्माण कार्य के शुभारम्भ अवसर पर आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि के ब्रह्मत्व में वैदिक यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आनन्दराम, जगदीश, कमलसाय, लीबा, दिनेश कुमार, बोधसागर, कुंवर साय, रविशंकर आर्य, रामेश्वर आर्य, श्यामसुन्दर अग्रवाल, रविशंकर, धनेश्वर आर्य, प्रेमानन्द आर्य, पुरनोराम वानप्रस्थी, कृतराम आर्य, बीरबल आर्य, बुधराम नाग, राधेश्याम सहित सैकड़ों आर्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम सोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज पंगसुवा में वैदिक यज्ञ सत्संग सम्पन्न

पंगसुवा (जशपुर)। दिनांक २६ मार्च २०१७ रविवार को आर्यसमाज पंगसुवा, वि.खं. पत्थलगांव, जिला जशपुर (छ.ग.) में श्री शोभाराम आर्य, श्री रामेश्वर आर्य, श्री बीरबल आर्य के विशेष सहयोग से यज्ञ, भजन, उपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजमान के रुप में श्री गनपत नागवंशी धर्म पत्नी श्रीमती शकुन नाग उपस्थित थे। कार्यक्रम में रामेश्वर आर्य, शोभाराम आर्य, गनपतराम आर्य, भुनेश्वर आर्य, सुखसाय, रोन्हाराम, हृदन साय, जगदीश नाग सहित आसपास के ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

संवाददाता : बीरबल आर्य, सभा प्रचारक, रायगढ़

आर्यसमाज मंदिर लाडवा (कुरुक्षेत्र) हरियाणा में २८ मार्च से २ अप्रेल २०१७ तक हुआ वेद प्रचार व नवसंवत्सर व आर्यसमाज स्थापना दिवस सोल्लास सम्पन्न

हरियाणा। महाभारत कालीन कुरुक्षेत्र के जनपद के लाडवा नगर का आर्यसमाज विगत करीब ८० वर्षों से गतिमान है। स्व. ब्रह्मचारी आचार्य श्री सत्यव्रत जी जैसे विद्वान यहां के मुख्य धर्माचार्य रह चुके हैं। इस वर्ष नवसंवत्सर व आर्यसमाज स्थापना दिवस के उत्सव को षड् दिवसीय वेद प्रचार की दृष्टि से मनाया गया। जिसमें मुख्य वक्ता व यज्ञ के ब्रह्मा के रुप में होशंगाबाद (म.प्र.) के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी व प्रसिद्ध भजनोपदेशक पानीपत के तेजवीर जी व पं. रामनिवास जी आमंत्रित किये गये। आचार्य जी प्रातः ७.३० से १० बजे के सत्र में ईश्वर व यज्ञ के बारे में उपदेश देते थे और रात्रि ८ से १० के सत्र में वेदमन्त्रों को केन्द्र बनाकर व्याख्यान देते थे, जिससे राष्ट्र व परिवार की समग्र उन्नति के विभिन्न सूत्र को दिव्य मोतियों के रुप में जनता जनार्दन को प्राप्त होते रहे।

इस उत्सव का स्वरुप और वृहत् हो गया जब आचार्य जी ने २ अप्रैल रविवार को आर्यसमाज से संबंधित सभी सदस्यों को अपने जोड़ों सहित आने का आह्वान किया जिससे पूरा कार्यक्रम बड़े हाल से आर्यसमाज मंदिर के खुले ग्राऊंड में शिफ्ट करना पड़ा और २९ यज्ञ वेदियों पर ११३ यजमान दम्पत्ति उपस्थित हुये। आचार्य जी ने सभी विशेष वेद मंत्रों से आहुतियां दिलवाई और सभी को स्थायी रुप से आर्यसमाज मंदिर को अपनी संस्था मानकर जुड़ने का आग्रह किया और अपने घर में स्वाध्याय व यज्ञ संध्या नियमित करने का व्रत लेने के लिए प्रेरणा दी।

प्रतिदिन मंच संचालन हमारे आर्यसमाज के पुरोहित बिहार निवासी पं. श्रीराम जी शास्त्री ने किया और अंतिम दिन उपप्रधान श्री जयकिशन जी ने इस उत्तरदायित्व को निभाया। लगभग ६०० महानुभावों के लिए ऋषि लंगर की व्यवस्था की गयी थी सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। इस कार्यक्रम में रादौर, बूडिया, धनौरा, जाटान, बनी, बन, बदौंदी, बदौन्दा, बरोदी सहित अनेक ग्राम के आर्यसमाजों ने भाग लिया। श्रीमती राकेश गर्ग, रोहित, सुरभि, जयदेय आर्य, अनमोल, डॉ. सुशील, रामसिंह, राजीव, अश्विनी सिंघल आदि का विशेष योगदान रहा।

संवाददाता : ज्ञानेन्द्र टंडन मंत्री आर्यसमाज मंदिर लाडवा (कुरुक्षेत्र) हरियाणा

आर्यसमाज बिलासपुर में दयानन्द जन्मोत्सव–बोधात्सव संपन्न

बिलासपुर। महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस फाल्गुन कृष्ण दशमी से बोध रात्रि त्रयोदशी तक आर्यसमाज एवं दयानन्द विद्यालय बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दयानन्द जन्म दिवस के उपलक्ष्य में २१ फरवरी को ऋषि गाथा भजन प्रतियोगिता रखा गया। २२ फरवरी को रंगोली प्रतियोगिता एवं विद्यालय के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम का रंगा आयोजन किया गया। २४ फरवरी ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर प्रातः ६ बजे प्रभात फेरी निकाली गई ऋषि महिमा का गुणगान तथा वैदिक जयघोष लगाते हुए, चौक-चौराहों में वेदों के संदेश सुनाते हुए आर्यों की टोली आर्यसमाज पहुंची। सामूहिक देव यज्ञ के अवसर पर ऋषि के आदर्शों को अपनाने का संकल्प लेते हुए शांति पाठ एवं प्रसाद वितरण के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

नववर्ष एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस का आयोजन

बिलासपुर। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नववर्ष के उपलक्ष्य में बुधवार २९ मार्च २०१७ को आर्यसमाज एवं संयुक्त हिन्दु संगठन के तत्वावधान में विशाल शोभा यात्रा तथा रविवार ९ अप्रैल २०१७ को ऋषि भंडारा का आयोजन आर्यसमाज बिलासपुर में किया गया। ***संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल, मंत्री आर्यसमाज बिलासपुर***

सामवेद पारायण महायज्ञ से हुआ शिक्षा सत्र का प्रारंभ

छाल। दि. २० मार्च से २३ मार्च १७ तक डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एचएससील छाल के नव शिक्षा सत्र का प्रारंभ शाला प्रांगण में आयोजित त्रिदिवसीय सामवेद पारायण महायज्ञ से हुआ। पं. राधावल्लभ तिवारी एवं हीरालाल के मुखारविंद से उच्चारित सामवेद के मंत्रों पर आहुतियां दी गई। प्राचार्य एल. के पाढ़ी के नेतृत्व में शाला के शिक्षक शिक्षिकाओं, विद्यार्थियों, पालकों एवं स्थानीय नागरिकों ने इस महायज्ञ में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। ***संवाददाता : अजय शर्मा, छाल***

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा) में प्रवेश प्रारम्भ

योगिराज भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली एवं युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रज भूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्र भक्त महाराजा श्री महेन्द्र प्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा ६ एवं ७ में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम ४ अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा ८ में भी प्रवेश पा सकता है।

गुरुकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी विषयों की गहनता से अध्ययन कराया जाता है। अतः विद्यार्थी का मेधावी होना आवश्यक है, इसलिए अभिभावक मेधावी, सुशील विद्यार्थी को ही प्रवेशार्थ लावें। गुरुकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है, इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम है, आर्यजन इसका लाभ उठाकर अपनी संतानों को शिक्षित, संक्षम, संस्कारवान एवं चरित्रवान् राष्ट्रभक्त तथा ऋषि भक्त बनाकर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

आचार्य स्वदेश
कुलाधिपति
(मो. ९४५६८११५१९)

आचार्य हरिप्रकाश
प्राचार्य
(मो. ९४५७३३३४२५, ९८३७६४३४५८)

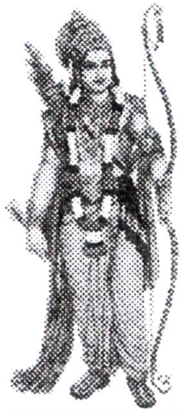

॥ ओ३म् ॥

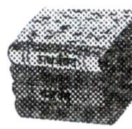

गाँव गाँव यज्ञ, हर गाँव यज्ञ

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
संभागीय आर्यसमाजों के संयुक्त तत्वावधान में

सघन वेद प्रचार महाभियान एवं आर्यसमाजों का वार्षिक उत्सव

दिनांक 21 अप्रैल 2017 से 19 जून 2017 तक

वेद प्रचार महाभियान

आज वेदों के पठन पाठन अवरुद्ध होने से अविद्या अपने चरम पर है अतः आर्यसमाज का उद्देश्य एवं लक्ष्य है विद्या की वृद्धि एवं अविद्या का नाश इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु आवश्यक है वेदों का संदेश जन-जन तक पहुंचे। विद्या की वृद्धि से गहन अंधकार में भटकते अज्ञान से भरे लोगों को नयी दिशा मिलेगी लोग अनाचार छोड़ सदाचारी बनेंगे। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रयास है कि जन-जन तक पूरे प्रांत में सघन वेद प्रचार हो। इसका आरम्भ रायगढ़ संभाग से हो रहा है आप सभी से निवेदन है कि इस पावन कार्य में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर तन-मन-धन से सहयोगी बन वेदों की रक्षा जैसे पावन कृत्य में सहभागी बनें।

-: आमंत्रित विद्वान :-

आचार्य अंशुदेव आर्य, प्रधान, छ.ग. प्रां.आ.प्रति. सभा

आचार्य जगबन्धु शास्त्री, रायगढ़, **पं. मुकेश शास्त्री**, रायपुर

निवेदक : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं रायगढ़ संभागीय समस्त आर्यसमाजें

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। **अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

जलता हुआ अंगारा है.

आर्यसमाज इस भूमण्डल पर जलता हुआ अंगारा है ।
आर्यवीरों ने इसके खातिर, अपना जीवन वारा है ॥

विश्व क्षितिज पर रहा चमकता वीरों के बलिदान से ।
सत्य डगर पर बढ़ा निरंतर, लड़ा सदा अज्ञान से ॥
इसके आने से देश-धर्म का चमका पुनः सितारा है ।
आर्यसमाज इस भूमण्डल पर जलता हुआ अंगारा है ॥

भ्रम का भूत भगाने वाला, पापों का गढ़ ढाने वाला ।
वेदों के सद्ज्ञान के द्वारा, फैलाता मन में उजियाला ॥
पाखण्ड, अविद्या, गुरुडम रुपी नागों को ललकारा है ।
आर्यसमाज इस भूमण्डल पर जलता हुआ अंगारा है ॥

मजबूत कवच हिन्दू जाति का रक्षक पोषक कहलाया ।
वैदिक धर्म का विघटन रोका, आर्यों ने सम्बल पाया ॥
कृण्वन्तोविश्वमार्यम् का फिर गगन में गूंजा नारा है ।
आर्यसमाज इस भूमण्डल पर जलता हुआ अंगारा है ॥

आडम्बर और कुरीतियों पर करता है व्यापक संधान ।
इस भट्टी में तप जाने पर कुन्दन बन जाता इंसान ॥
अमर हो गया संजय जग में, जिसने इसे स्वीकारा है ।
आर्यसमाज इस भूमण्डल पर जलता हुआ अंगारा है ॥

आर्य बनें शुभ कार्य करें, ऋषिवर ने हमें पुकारा है ।
लाला लाजपत, हंसराज जी, लेखराम सरदारा है ॥
गुरुदत्त विद्यार्थी, श्रद्धानन्द ने, इसको खूब संवारा है ।
आर्यसमाज इस भूमण्डल पर जलता हुआ अंगारा है ॥

☼ आर्यकवि संजय सत्यार्थी ☼
आर्य सदन, पो.- नेमदार गंज, जिला-नवादा ८०५१२१ (बिहार)

CHH-HIN/2006/17407 मई 2017 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001